डा० लक्ष्मीनारायण लाल

नया तमाशा

[छः एकांकी]

डा० लक्ष्मीनारायण लाल

किताबघर
गाँधीनगर, दिल्ली 110031

© लेखक

प्रकाशक : **किताबघर**
मेन रोड, गांधीनगर, दिल्ली-११००३१

प्रथम संस्करण : १९८२

मूल्य : बारह रुपये

मुद्रक : संजीव कम्पोजिंग एजेंसी, गांधीनगर द्वारा
गौतम आर्ट प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

AYA TAMASHA
: Dr. Laxminarayan Lal
(Hindi)
Price Rs. 12-00

दो शब्द

अब से पांच साल पहले सबरंग मोहभंग नाम से मेरा एक नाटक आया था। इसमें कई स्वतंत्र दृश्यों अथवा एकांकियों से वह नाट्य पूर्ण हुआ था। तब से यह कभी पूर्ण नाटक, कभी इसके दृश्यों को एकांकी नाटकों के रूप में लगातार मंच पर प्रस्तुत किया जाता रहा है।

अब इस प्रथम नूतन संस्करण में अपने चार नये-अप्रकाशित एकांकी—चांदीराम, मैं और मैं, लड़कियां और नया तमाशा—दे रहा हूं। और स्वभावत: यह अपने नये नाम 'नया तमाशा' से नाट्यप्रेमियों के समक्ष प्रस्तुत है।

यह पूर्ण नाट्य—अपने एकांकी और निर्बन्ध संपूर्ण नाटक रूप में शुद्ध रंगमंच और रंगकर्म की चीज है। आज हिन्दी क्षेत्र में काफी रंगकार्य हो रहा है। दर्शक समाज खूब बढ़ा है और निरंतर बढ़ रहा है। लोग रंगमंच से मनोरंजन चाहते हैं—यह कोई बुरी बात नहीं है। मन ही तो मुख्य है। मन के रंजन के बहाने ही दर्शक रंगशाला में आता है।

मेरा अनुभव जन्य यह विश्वास है कि जब तक आदमी अपने यथार्थ से जुड़ा न रहेगा और जिन्दगी में से कोई मौज मस्ती, मनोरंजन और कोई खास रस निकाल करके वह मंच पर प्रस्तुत न कर पायेगा—जो जीवन की परम अनिवार्यता है—तब तक हमारे यहां हिन्दी क्षेत्र में अपना नया रंगमंच अपने मूल से नहीं जुड़ पायेगा।

संस्कारत: आदतन, प्रकृति अनुसार यहां के लोग हंसी-मजाक, खेल-तमाशा, मौज-मस्ती मारने वाले हैं। नये नाटक—रंगमंच को लोगों के इन्हीं आदतों से आकृष्ट करके उन्हें रंगमंच के गहरे संस्कारों से जोड़ना

महत्त्वपूर्ण कार्य है।

इसके लिए अनेक स्तरों पर शिक्षण और प्रशिक्षण अनिवार्य है। हमारे यहां गत तीस वर्षों में काफी रंगप्रतिभायें आयीं, पर अंततः केवल धनार्जन और अहंकार तोष के लोभ में रंगमंच से दूर चली गयीं। प्रायः अभी तक यही हो रहा है कि रंगमंच क्षेत्र में वे लोग आते हैं जिनके कोई सार्थक गहरे संस्कार नहीं होते।

हमारा हिन्दी रंगमंच आज उस महत्त्वपूर्ण चरण पर पहुंचा है जहां गहरे सार्थक संस्कार वाले व्यक्तियों की बड़ी अपेक्षा है। वह चरण अपना लक्ष्य प्राप्त करेगा—इस आशा और विश्वास के साथ हिन्दी रंगमंच निरंतर समृद्ध होता रहेगा।

दीपावली २७ अक्टूबर १९८१ **—डा० लक्ष्मीनारायण लाल**
नयी दिल्ली

क्रम

नया तमाशा	...	९
हेमू का बलिदान	...	२१
लड़कियां	...	३४
मैं और मैं	...	४९
सबरंग मोहभंग	...	५५
माता	...	८५

नया तमाशा

पात्र

कपूर और दास (दो गायक)
सेन बाबू (सेक्शन आफिसर)
मिस्टर वर्मा (क्लर्क सीनियर)
चंदी—चपरासी
रामी—चंदी की पत्नी
बड़े साहब—
चंदर—चपरासी

[प्रकाश दो गायकों पर उभरता है। दोनों बाजा बजाते हुए गा रहे हैं।]

आजा !
आजा आजा देख तमाशा।
आजा ! !
घर हो या दफ्तर हो।
बाबू हो मिस्टर हो।
सबको है अपनी-अपनी
अपनी कुर्सी।
अपना रोब।
अपनी लुंगी।
अपनी टोप।
कैसी बातें।
कैसी चीत।

कैसी हार।
कैसी जीत।
भाड़ में जाय देश।
भाड़ में जाय समाज।
अल्ला अल्ला।
खैर सल्ला।
मत करो हल्ला।
ऐ लल्ल।
आजा आजा देख तमाशा।
आजा।
आजा !
देख तमाशा देख तमाशा।
[**अभिवादन करते हुए**]
कैसा है यह खेल तमाशा।
आजा !
खेल तमाशा।
देख तमाशा !!

[**इस बीच दफ्तर का दृश्य तैयार। ये दोनों गायक दफ्तर के कर्मचारी—कपूर और दास होकर अपनी-अपनी सीटों पर बैठ जाते हैं। एक ओर सेन बाबू, मिस्टर वर्मा, बिल्कुल अलग बड़े साहब बैठे कार्यरत हैं।**]

साहब : मिस्टर वर्मा !
वर्मा : सेन बाबू !
सेन : दास !
दास : कपूर।
कपूर : चन्दीराम।
दास : चन्दीराम। चन्दीराम। चपरासी चन्दीराम साढ़े बारह बज गये अब तक नहीं आया चन्दीराम। नालायक !
कपूर : काम चोर।

सेन : नमकहराम।
वर्मा : निकाल बाहर करो इसे। जब तक नौकरी नहीं मिली घर और दफ्तर के चक्कर काटता रहा। नौकरी मिली नहीं कि दिमाग खराब।
कपूर : आप भी तो दस बजे की जगह साढ़े दस बजे दफ्तर आते हैं।
वर्मा : क्या कहा ?
कपूर : कुछ नहीं सर ! यस सर।
सेन : क्या बोलना मांगता है ?
दास : आप तो बारह बजे आते हैं।
सेन : क्या बोला ?
दास : कुछ नहीं सर, कुछ नहीं। यस सर यस सर !

[**दास और कपूर—गायक रूप में**]
यस सर यस सर खेल तमाशा
नीचे से ऊपर सत्यानाशा
नीचे वाला ऊपर वाले को पकड़े
ऊपर वाला नीचे वाले पर अकड़े।
माइट इज राइट
राइट इज माइट
आजा आजा खेल तमाशा।
[**...यही दुहराते हैं। इस बीच इधर दफ्तर के लोग क्रमशः बड़े साहब फोन पर, वर्मा और सेन आपस में 'दैट्स राइट' दुहराते हैं। तभी दौड़ा हुआ चन्दीराम आता है। कपूर और दास उसे घूरने लगते हैं।**]

कपूर : कहां था अब तक ?
दास : तेरी खैरियत नहीं।
चन्दी : सर ! बीवी को अस्पताल ले गया था। बहुत बीमार चल रही है साहब !
वर्मा : दफ्तर को अस्पताल समझ रखा है।

सेन : मिस्टर वर्मा, इसकी एक ही दीन की छुट्टी काट लो। यह बोदमाश है, नोमकहराम है !

चन्दी : नहीं साहब मर जाऊंगा। ऐसी गलती फिर नहीं करूंगा।

कपूर : अच्छा दौड़ के गर्म-गर्म चाय ला !

दास : एक जोड़ा पान।

वर्मा : एक गिलास पानी।

सेन : दौरता हुआ मेरे घोर जायेगा, मेरा लींच लायेगा।

[भागने लगता है। बड़े साहब की घंटी बजती है। चन्दीराम दौड़ा हुआ जाता है।]

साहब : यह फाइल सेन साहब को—बहुत जरूरी, आज ही इस पर एक्शन हो जाना चाहिए !

चन्दी : सलाम मतलब !

साहब : मैं लंच पर जा रहा हूं।

चन्दी : साहब, साढ़े तीन बजे आयेंगे या साढ़े चार बजे ?

साहब : तुझसे साहब !

चन्दी : सरकार गलती हो गयी। यस सर, माफी !

साहब : क्लास वन आफिसर हूं। अठारह साल की सर्विस पूरी हो चुकी है। यह मेरे अधिकार में है···

[कपूर और दास पास आकर सुन रहे थे]

कपूर : यह मेरे अधिकार में है !
यह मेरे अधिकार में है !
यह मेरे अधिकार में है !

[साहब जाते हैं। चन्दीराम वह फाइल उठाये सेन बाबू को देता है।]

कपूर-दास : 'इम्पार्टेन्ट ! इमीडियेट'।
बहुत जरूरी। फौरन !
आज ही इस पर एक्शन हो जाना चाहिए।

सेन : (फाइल पर नोट करते हुए) मिस्टर वर्मा को—

मोस्ट इम्पार्टेंट···इमीडियेट···

चन्दी : (**फाइल लेकर**) बहुत जरूरी, सबसे ज्यादा जरूरी, फौरन।

सेन : शुनो ! मेरा लंच।

कपूर : चाय लेने अभी तक नहीं गया।

दास : मेरा पान कहां है। तू अपने-आपको समझता क्या है।

चन्दी : हां, यही तो खयाल है, मैं अपने-आपको समझता क्या हूं। **मिस्टर वर्मा के पास फाइल**) साहब बहुत जरूरी, फौरन।

वर्मा : (**फाइल उसके मुंह पर फेंकते हुए**) बत्तमीज, एक गिलास पानी लाने को कहा था।

चन्दी : अभी लाया साहब !

वर्मा : यह फाइल कपूर को दो।

[कपूर को देता है।]

चन्दी : अजी ऐसे क्यों बोलते हो !

[चला जाता है। कपूर ट्रांजिस्टर खोलकर मैच की कमेन्ट्री सुनने लगता है।]

दास : बन्द कर यह शोर।

कपूर : चुप रह।

दास : साहब सुनेंगे तो···।

कपूर : तो क्या कर लेंगे मेरा···नौकरी पक्की हो चुकी है अपनी।

[चन्दी आता है।]

चन्दी : यह लीजिए चाय। यह लीजिए पानी सर···ये लो अपना पान।

[पान दास की ओर फेंकता है—दास के मुंह पर लग जाता है।]

दास : बत्तमीज, तेरी यह हिम्मत ! (**बढ़कर चन्दी को गिरेबान से पकड़ कर**) तू नहीं जानता मेरी ताकत,

तेरी नौकरी की फाइल अभी मेरे पास है।

[धक्के देकर गिरा देता है।]

कपूर : अभी 'टैम्पोरेरी' है।

वर्मा : यह क्या शोर मचा रखा है!

सेन : बड़े बाबू ई क्या तमाशा है!

वर्मा : खामोश!

सेन : ओरे चोंदीराम, आमा लंच ओ भी तक नहीं आता। हम तुमको 'डिसमिस' करा देने राकता। छोड़ो बाबू इसकी फाइल हमारे पास 'पुट अप' करो! यह ऊलू का पाट्ठा आमार 'पावर' नहीं जानता!

[सबकी तरफ से दबाव।]

कपूर : यह चपरासी बिल्कुल बेकार है।

दास : इसे फौरन निकाल दिया जाना चाहिए।

वर्मा : देखिए लंच का टाइम हो गया। हम ढाई बजे इस पर एक्शन लेंगे।

[संगीत। सब चले गये हैं। धीरे-धीरे प्रकाश बदलता है। संगीत तेज। पड़े-पड़े चन्दीराम एकाएक चीखता है।]

चन्दी : नहीं। मैं चन्दीराम चपरासी नहीं हूं। चपरासी रह कर इस तरह जिन्दा नहीं रह सकता। कोई मेरे कामों की प्रशंसा नहीं करता। सब मेरा अपमान करते हैं, जैसे मैं इंसान नहीं। फिर अकेले मैं क्यों मरूं! मुझे वह रास्ता मालूम हो गया कैसे कोई नीचे से ऊपर जाता है। (**हंसता है**) मैं चपरासी नहीं बड़ा बाबू हूं। बड़ा बाबू—हैड क्लर्क। अफसर···

[चलता है। केवल एक किनारे रोशनी सिमट जाती है। जहां चन्दी की पत्नी रामी है।]

चन्दी : हैलो मिसेज (**चांदीराम**)! मैं अब चपरासी नहीं बड़ा बाबू हूं। हैड क्लर्क। अब तुम्हारा नाम रामी नहीं,

मिसेज (**चांदीराम**) है। जरा मुंह ऊपर उठाओ। यह बात हुई न! शाबाश। टाटा, जरा मार्केट हो आऊं। काफी पैसे हाथ आ गये हैं। एक फाइल को नीचे से ऊपर, दायें से बायें कर दिया, बस! मोस्ट 'कांफिन्डेशियल' किसी से कहना नहीं!

रामी : अरे साढ़े ग्यारह बज गये हैं। आफिस जाने में···।

चन्दी : अब कैसी देरी। नीचे का लोग सलाम मारता है। ऊपर का लोग डरता है। टाटा, बाई बाई।

[वही संगीत।]

[दृश्य बदलता है। दफ्तर के दृश्य पर प्रकाश बढ़ता है। चन्दी मिस्टर वर्मा की कुर्सी पर बैठा है। बड़े साहब बैठे हैं। रामी स्टैनो को डिक्टेशन दे रहे हैं। चन्दर नामक दूसरा चपरासी आ गया है। कपूर, दास आते हैं।]

वर्मा : यह क्या तमाशा है, मेरी सीट। उठिये यहां से।

चन्दी : चपरासी, इनके लिए दूसरी सीट लाओ।

चन्दर : यह चपरासी का काम नहीं है।

[स्टूल पर बैठा किताब पढ़ता हुआ बीड़ी पीता जा रहा है।]

चन्दर : वाह-वाह! क्या हीरो ने 'विलेन' को गच्चा दिया है। वाह बेटा, जियो मेरे लाल। वाह!

वर्मा : चपरासी।

चन्दर : देखिए साहब, जबान संभाल कर बोलिए। आप नहीं जानते मेरी ताकत। मैं चपरासी यूनियन का 'वाइस प्रेसीडेन्ट' हूं। (**किताब**) वाह बेटे! लड़े जा अपने हक के लिए···।

[वर्मा और चन्दी में कुर्सी के लिए संघर्ष। सब तमाशा देख रहे हैं। चन्दर किताब पढ़ने में मस्त है। कपूर और दास ट्रांजिस्टर सुनने में, सेन अखबार पढ़ने में,

साहब स्टैनो के साथ चाय पीने में मस्त। चन्दीराम, वर्मा को पटक कर उनके सीने पर बायां पैर रखे खड़ा है।]

सेन : (अचानक) पुलिस ! पुलिस !

चन्दी : (दौड़कर) चुप रहो !

[इस बीच वर्मा मौका देखकर अपनी कुर्सी पर फिर बैठ जाते हैं।]

सेन : ऐसा खतरनाक आदमी इस दोफ्तर में नोई रोह सकता।

चन्दी : खतरनाक आप हैं—दफ्तर में डेढ़ घंटे देरी से आते हैं। अपने से नीचे वालों पर रोब गांठते हैं, ऊपर वालों के पैर चाटते हैं। दफ्तर का एक काम नहीं। फाइल ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर···किसी को कोई डर नहीं।

सेन : मैं तुम्हारे खिलाफ 'एक्शन' लूंगा।

चन्दी : तुम्हारे खिलाफ मैं 'एक्शन' लूंगा !

सेन : क्या ?

[प्रकाश एकाएक फिर वहीं बीच में सिमट जाता है। चन्दी अपनी पत्नी के साथ दिखता है।]

चन्दी : हैलो डार्लिंग !

रोमी : हैलो चन्दी !

चन्दी : साहब से वह काम कराना है।

रामी : क्या ?

चन्दी : अब क्लर्क से आफिसर बनना है मुझे !

रामी : उसके लिए योग्यता—।

चन्दी : कौन देखता है आजकल योग्यता, बस ऊपर से दबाव 'प्रेशर' होना चाहिए।

रामी : हटो। मैं क्या जानूं !

चन्दी : जहां तुम हो मेरी जान, वहां सब मुमकिन है।

रामी : अब तुम्हें जरा भी शर्म नहीं।

चन्दी : किसी तरह अफसर की कुर्सी पा लूं। फिर दिखाऊंगा सालों को।

रामी : कैसी भाषा बोलते हो।

चन्दी : अब यही चलती है।

रामी : क्या ?

चन्दी : जब कोई अपना काम नहीं कर रहा, तो क्या मैं ही पागल हूं ?

रामी : समझ लो, इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी एक दिन !

चन्दी : तुम मेरी बात मानती हो या नहीं।

रामी : नहीं। मैं तुम्हारे साहब के पास नहीं जा सकती। मैं तुम्हारी पत्नी हूं।

चन्दी : बकवास बंद करो !

रामी : यह खेल खतरनाक है।

चन्दी : यही खेल चारों ओर है।

[देखती रह जाती है।]

चन्दी : मैं तुम्हारा पति हूं। मेरी यह इच्छा पूरी करो, चाहे जैसे !

[वही संगीत। प्रकाश फैलता है। दफ्तर का दृश्य उभरता है। साहब के पास रामी। चन्दी सेन की कुर्सी पर बैठा है।]

चन्दर : **(किताब पढ़ता हुआ)** वाह बेटे कहां से कहां पहुंच गये।

[कपूर और दास सीटियां बजाते हैं। सेन आते हैं।]

सेन : यह क्या ओसभ्यता है। तुम ऊधर से इधर कैसे आ गया। यह क्या गोलमाल है !

वर्मा : आपका यहां से ट्रांसफर हो गया सर, लीजिए ट्रांसफर आर्डर।

सेन : ओमां, ई क्या हो गया ? किन्तु यह कैशे हुआ ! मैं

इस भ्रष्टाचार के खिलाफ ओदालत में 'केस' करूंगा। अभी 'रिट' दाखिल करता हूं !

चन्दर : साहब, वक्त क्या है ?

सेन : साढ़े बारह बजने में अभी तीन मिनट शेष हैं।

चन्दी : यह दफ्तर आने का समय है ?

सेन : ऐशा बोलने वाला तुम कौन हैं ?

चन्दर : साहब लंच बाक्स लेने जाऊं ?

सेन : मोज़ाक करता है ? मेरा 'पावर' नहीं जानता है ? मैं 'गोजेटेड' अफ्सर हूं !

चन्दी : इस जगह पर मैं आ गया हूं। तुम्हारा ट्रांसफर हो गया। मेरा मुंह मत देखिए।

सेन : मेरी समझ में कुछ नेहीं आ रहा। मेरा माथा घूम रहा है।

चन्दर : ये मारा। वाह पट्ठे !

सेन : बड़े बाबू, इसको बोलो—मेरी जगह से हट जाये !

वर्मा : यह मेरा काम नहीं !

सेन : मिस्टर कपूर ! मिस्टर दास। आप दोनों मेरा साथ दीजिए।

कपूर : हम किसी का साथ नहीं देते !

सेन : यहां इतना भ्रष्टाचार ! हाय कैसा जमाना आ गया।

चन्दर : खुद नहीं लाये। वाह !

दास : यार मौसम बदल गया। हाय रे।

चन्दी : (**एकाएक चीखता है**) बन्द करो यह बकवास। मेरे लंच का समय हो गया। चपरासी मेरा लंच ला। लाता है कि नहीं ?

चन्दर : नहीं !

चन्दी : गेट आउट मिस्टर सेन ! कपूर···दास···ले जाओ यहां से फाइलें। ये कागजात। मैं यहां कोई काम करने नहीं महज कुर्सी पर बैठने आया हूं। एक-एक की खाल खींचकर रख दूंगा।

[सब कुर्सियां उठाये उस पर प्रहार करने वाले हैं। तभी बड़ा साहब रामी को अपने साथ लिए बाहर जाने लगता है। चन्दी दौड़कर पुकारता है।]

चन्दी : रामी ! रामी !

[प्रकाश के साथ संगीत बदलता है। आजा-आजा खेल तमाशा। सब एक-दूसरे को आश्चर्यचकित देखने लगे हैं।]

चन्दी : यह कैसा सपना था, जो मैंने देखा ! जो मैं नहीं हूं वह मैंने बनते हुए देखा। जो मैं हूं उसे पिटते, बिकते और मरते हुए देखा। हम सब अपनी-अपनी लक्ष्मण रेखा पार कर रहे हैं। अंधेरे में खड़ा कोई घूरता हुआ हमें देख रहा है।

सब : क्या ?

[पृष्ठभूमि में मार-पीट, चीख-प्रकार के ध्वनिप्रभाव पर दोनों गायक बहुत ही हल्के स्वरों में गाते हैं।]

आजा आजा देख तमाशा
आजा आजा देख तमाशा
खेल तमाशा
देख तमाशा
[फुसफुसाहट स्वरों में]
सबको अपनी-अपनी।
भाड़ में जाय कथनी करनी
आजा आजा देख तमाशा।
खेल तमाशा देख तमाशा।
यह कैसा खेल है ?
इसे कौन रोके ?
रेलापेल है !
ठेलमठेल है।

बन्दूक ताने हैं।
कोई किसी की नहीं सुनता।
कोई कुछ नहीं मानता।
जिसकी लाठी उसकी भैंस।
मेरी भैंस को डंडा क्यों मारा!
भाई भतीजा!
जात पांत।
क्या पार्टी बनायी।
लूटो मेरे भाई!
खंजर निकली है।
कायर हंसते हैं।
लोग देखते हैं।
राम राम रटते हैं।
आजा आजा।
आजा आजा।
देख नहीं!
आजा आजा।
आजा आजा।

हेमू का बलिदान

पात्र

हेमू : मुवारिज खां
पूरनमल : समांत
वाचक : नर्तकी
कथाकार : ढिंढोरची
सिपाही : दरबान आदि

संगीत

'सहजो तनिक सोहना पर कहा गुदारा सीस'
मरना है रहना नहीं जाना बिस्वे बीस।
सहजो गुरू दीपक दियो रोम-रोम उजियार
तीन लोक दृष्टा भई मिटो भरम अधियार।

वाचक : राम तंजू पै गुरू न बिसारू
गुरू के सम हरि को न निहारू।

संगीत

"आज हम हेमचन्द की कुछ कथा सुनाते।
जिसके शौर्य चरित्र गा-गाकर हम नहीं अघाते।
पंजय पिता पूरनमल जिनके हेम पुत्र कहाये।
धीर वीर ये महावीर थे यह इतिहास बताये।
जिसने अनन्त युद्ध कर मुगल अफगानों में जय पाई।

जिसने प्राण हथेली पर रख धर्म ध्वजा फहराई।
आज हम कुछ हम हेम चन्द्र की कुछ कथा सुनाते।

कथाकार : मध्यकालीन भारत के महान सेना-नायक अकबर के एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी परमवीर हेमू का जन्म आधुनिक राजस्थान राज्य में अलवर क्षेत्र के तीन मील दूर (**माछेरी**) नाम के स्थान पर हुआ था।

[दृश्य में पूरनमल, दो संतों के साथ चलते हुए दिखते हैं]

कथाकार : जिस समय सुलतान बहलोल लोदी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा, हिन्दुस्तान के विभिन्न सूबों का शासन छोटे राजकुमारों द्वारा किया जा रहा था और हिन्दुस्तान के प्रत्येक नगर में 'खुतबा' अलग-अलग व्यक्तियों के लिए पढ़ा जाता था उस समय जबकि चारों ओर अराजकता फैली हुई थी।

[पूरनमल और सन्तों पर दो अफगान सैनिकों का आक्रमण।]

प० अफगान : खबरदार जो कदम आगे बढ़ाया।

दू० अफगान : अपनी चीजें हमारे हवाले करो।

प० अफगान : हमारा मुंह क्या देखता।

दू० अफगान : कौन हो तुम ?

पूरनमल : हेमूशाह का पिता पूरनमल

प० अफगान : कौन ? हेमूशाह

पूरनमल : मेरा बेटा हेमूशाह—जो अराजकता और अंधकार में स्वप्न देखता है कि हिन्दुस्तान प्रभुता उसी की होनी चाहिए जो इस देश को एक राष्ट्र के रूप में प्यार करता है।

प० अफगान : बकवास बंद।

दू० अफगान : माल हाजिर करो।

पूरनमल : मेरा माल—हरनाम। लो हरिनाम हाजिर है हरनाम

का माल।

एक सन्त : यह हेमूशाह के पिता हैं। पर सन्त हृदय हैं।

दूसरा सन्त : हम वृन्दावन जा रहे हैं।

पूरनमल : आओ वृन्दावन चलें।

"जो आवे सन्तसंग में जातिवरुण कुल खोय।
सहजो मैल कुचैल, मिलैसु गंगा होय।"

प० अफगान : लूट लो इन्हें।

पूरनमल : खबरदार। मेरे सुपुत्र हेमूशाह को अगर पता चला तो बहुत बुरा होगा। अफगानों का दोस्त हेमूशाह।

दू० अफगान : अफगान दोस्त हेमूशाह। तुम उसके वालिद।

पूरनमल : हां पूरनमल

सन्त : पूरनमल के प्रताप से मिटयो जगत संताप।

(वे तीनों गाते हुए चले जाते हैं) दोनों सिपाही खड़े देखते रहते हैं।

'झूठा नाता जगत का झूठा है घर, बार,
यह जग झूठा देखकर सहजो भई उदास।'

[वे चले जा रहे हैं]

वाचक : रेवारी मक्षि घर है तिनको, क्या कीर्तनमय मन है जिनको।
साधन की सेवा सुठि करें, महाजन सबको मन है।
संत संगति वृन्दावन आये, श्री हरिवंश मिलसुख आये।

दूसरा दृश्य

[धीरे-धीरे प्रकाश आता है। हेमू अपने सैनिकों के साथ खड़ा है।]

कथाकार : हेमू को मान्यता ईस्लाम शाह के शासन काल में मिली। अपनी व्यापारिक चतुरता और असाधारण प्रशासकीय योग्यता के कारण हेमू शाही रसदसंग्रहकर्त्ता

नियुक्त हो गये । अत: वह बाजार के अधीक्षक हो गये । और शीघ्र ही सलीम रंवा अर्थात् इस्लामशाह के इतने विश्वासपात्र बन गये कि उसके शासनकाल में अपना परम अधिकार जमा लिया ।

[ढिढोरची एक नगाड़ा बजाता हुआ कहता आता है]

ढिढोरची : सुनो, सुनो, आम खास लोगो सुनो ! शाह सलीम खां के चचेरे भाई मुबारिज खां ने सल्तनत की बागडोर सम्हाल ली है, सुनो । भाई सुनो ! चंद ही दिनों में यहां दरबार लगेगा और अमीर उमरा के सामने मुबारिज खां को बादशाह की पदवी अदा की जायेगी । सुनो भाई सुनो !

हेमू : सुनो मैं हूं हेमू ।

सैनिक : हेमूवीर हेमू शाह ।

हेमू : सुनो, यह भी ढिढोरा पीट दो कि मुबारिज खां के सिर पर बादशाही मुकुट हेमू के हाथों से पहनाया जायेगा ।

ढिढोरची : सुनो, सुनो खास दरबार में शाह मुबारिज खां को बादशाही मुकुट हेमूशाह के हाथ से पहनाया जायेगा ।

[ढिढोरची कहता हुआ चला जाता है]

हेमू : यह हुई न बात, आखिरकार सलीम खां के चचेरे भाई मुबारिज खां बादशाह होगें । जानते हो, मुबारिज खां का असली नाम क्या है—आदिली, आदिली माने अत्याचारी ।

प० सिपाही : महाराज तो अब अत्याचारी बादशाही सम्भालेगा ।

दू० सिपाही : हिन्दुओं के अलावा अफगान और तुर्की सैनिक सब आपके इतने प्रशंसक हैं ।

प० सिपाही : सारी सेना आप पर विश्वास रखती है ।

दू० सिपाही : हिन्दु, अफगान, तुर्क सिपाही ही नहीं, अमीर उमरा सभी आपके साथ है ।

प० सिपाही ईश्वर भी आपके साथ हैं ।

दू० सिपाही : जिस काम में आप हाथ डालते हैं सब कुछ कामयाब होता है ।

प० सिपाही : जो भी जंग लड़ते हैं, फतहयाब होते हैं ।

दोनों सिपाही : (एकसाथ) बस । महाराज, संकल्प कर लीजिये ।

संगीत

हेमू : हे जगदीश्वर, महार्षि भृगु, च्यवन, भगवान परसराम का वंशज मैं संकल्प करता हूं—नये सल्तनतशाह मुबारिज खां के पास बादशाहियत पदवी के अलावा और कुछ न रहेगा । सारी ताकतें मेरे हाथों में होंगी । मध्यकालीन भारत से क्रूरता एवं बर्बरता से जिस हिन्दुत्व का गला घोंटा जा रहा है, उसकी मैं फिर से रक्षा करूंगा, कुछ भी न रख छोड़ूंगा । हे परमपिता परमेश्वर, जरूरत पड़ी तो आत्मबलिदान दूंगा ।

[दोनों सिपाही जै-जैकार करते हैं । सब का प्रस्थान]

[गायन उभरता है, उधर दरबार लगने की तैयारी होती है]

वीर था रणधीर था आफत का परकाला था वह
कौमियत का रूह था जूं चांद पर हाला था वह
राष्ट्र का सपूत था नाम हेमूशाह था
कौमियत की जान था कौम पर बलिदान था
कौमियत ही दीन था कौम ही ईमान था,
नाम हेमूशाह था ।

तीसरा दृश्य

दरबार

दरबान : आ अदब-बा मुलाहिजा होशियार, बादशाह सलामत,

शोहरे आफाक, अंजुमे तूरे माह पाकदिल मुवारिज खां, आलम पनाह तशरीफ ला रहे हैं।

[बाकायदा लगे दरबार में मुवारिज खां का आना सब का उठकर अदाब बजाना।]

मुवारिज खां : इस खुशी के मौके पर
जलवा दिया दे हुस्न का इक यार और भी
मूसासिकत है तालिबे दीदार और भी
फुरसत जो होती खामर—बेताब को नसीब
लिखता जरूर थोड़े से अशआर और भी

सब : वाह-वाह। वाह-वाह। मरहबा। मरहबा!

[संगीत। नर्तकी आती है गायन और नृत्य]

आपसे दिल लगा के देख लिया
संगो शीशा लड़ा के देख लिया
कोई शीशा मिला जो देख रास्ते में
दिल समझकर उठाके देख लिया
हमने क्या ले लिया हजूर से
एक जरा आंख उठा के देख लिया
जलवए-कुदरत खुदा तालिब,
देर में हमने जाके देख लिया

[नर्तकी नाच रही है। पृष्ठभूमि में गायन चलता है।]

मुवारिज खां : मरहबा। मरहबा। हेमूशाह, इसी वक्त मेरे सिर पर बादशाह का मुकुट पहनाये।

[हेमूशाह के हाथों मुकुट पहनाया जाना]

मुवारिज खां : इसको कहां जाती हो मेरी आंख···मेरी आंख हर वक्त हसीनों से लड़ी रहती है। दौलत हुस्न निगाहों में गड़ी रहती, देखना और दिखाना तो बहुत मुश्किल है। हां, 'तसब्बुर में नजर उससे लड़ी रहती' है।

हेमू : सावधान बादशाह सलामत फरमान जारी करते हैं गौर से सुनिये पहला फरमान।

मुवारिज खां : हेमूशाह मेरी ओर से तुम खुद मेरे फरमान जारी करो।

हेमू : बादशाह सलामत मुवारिज खां के फरमान के मुताबिक हेमूशाह ने सब ओहदों, सारे पदों पर मुकर्ररी, बर्खास्तगी, कानून-न्याय का काम अपने आप सम्भाल लिया। दूसरा फरमान शेर खां और सलीम खां के खजानों और उसके हाथी-घोड़े अस्तबलों पर हेमूशाह ने मुकम्मल कब्जा हासिल किया।

मुवारिज खां : और तीसरा फरमान हेमूशाह को राजा की पदवी दी जाती है।

[संगीत के साथ दृश्य समाप्त]

वाचक : इस्लामशाह की मौत के बाद पूरी सल्तनत में विद्रोह शुरू होने लगे। एक सूबे से दूसरे सूबे तक। एक शहर से दूसरे शहर तक विद्रोह की आग फैलने लगी है। असंतुष्ट अफगान सामंत अब पूरी तरह आजाद थे। चाहे जिसको अपना नेता चुन लें। इस्लामशाह की मौत के बाद सूरवंश के चार अफगान प्रधान-मुवारिज खां, इब्राहीम खां और मुहम्मद खां खाली सिंहासन के हकदार थे। इस्लामशाह की वसियत के मुताबिक मुवारिज खां का भान्जा फीरोज खां सिंहासन का मालिक था। मगर मुवारिज खां ने अपने उस भान्जे की हत्या कर दी। ऐसी अराजकता की हालत में हेमूशाह के शासन की बागडोर अपने हाथ में सम्भाली।

चौथा दृश्य

[**ढिंढोरची आता है।**]

ढिंढोरची : सुनो-सुनो अफगान सामंतों ने राजा हेमूशाह को अपना नेता कबूल कर लिया। हेमूशाह और इब्राहिम, जो सल्तनत के दावेदार थे, उनके बीच हुई लड़ाई में जीत हेमूशाह की हुई। राजा हेमूशाह ने ताजकरोनी और रुकसा नुहानी से भी लड़ाई हुई, जीत राजा हेमूशाह की हुई। राजा हेमूशाह को मुबारिज खां के शत्रुओं से बाईस लड़ाईयां लड़ीं, सब में वह विजयी हुए।

(**ढिंढोरची का प्रस्थान**) संगीत उभरता है।

गायक : आक्रांत हुई यवनों से, वह तीर प्रसन्नता जननी, रात-रात लालों के होते, बंदिनी थी जिसकी जननी। कितनों ने देखी बस वे, गत गौरव भूल चुके थे, उस जननी के आशीषों ने तेरा वीराण जगाया, तेरा वीरत्व जगाया।

पांचवा दृश्य

[**अपने सैनिकों के साथ राजा हेमूशाह।**]

हेमू : मेरे अफगान, तुर्क, हिन्दु वीर सिपाहियों और सामंतों में अपने-आपको आप लोगों में से एक समझता हूं। बहलोल ने लोदी वंश की कीर्ति और प्रतिष्ठा तक पहुंचाया। शेरशाह ने शूरवश को जगमगाया। और अब अपने पिता की विजयों का उत्तराधिकारी मुगल हुमायूं हम सब का नाश करने और अपना राज फिर यहां कायम करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहा है। इसलिए आप सब सच्चे भारत मां के सपूत हैं तो आपसी भेदभाव और दुश्मनी भूलकर सब एक जुट हो

जायें तो हम अपने साम्राज्य को मुगलों की गुलामी से बचा सकते हैं, लेकिन यदि आप में कोई एक भी साम्राज्य शासन के योग्य नहीं समझता तो आप अपने में से किसी एक अधिक योग्य नेता और बहादुर व्यक्ति को चुन लें, तकि मैं भी उसके प्रति राजनैतिक-स्वामिभक्ति की शपथ खा सकूं।

प० सिपाही : हम सबके शहनशाह आप हैं।

दू० सिपाही : आप ही हमारे सिपेहसलार जंग हैं।

सब : हेमूशाह की जय।

प० सामंत : हम सब आपके प्रति राजभक्ति की शपथ लेते हैं।

दू० सामंत : हम सब आपके प्रति स्वामिभक्ति की शपथ लेते हैं।

प्रस्थान

कथाकार: : हुमायूं की मृत्यु, दिल्ली पर राजा हेमूशाह का अधिकार, हेमू के सिंहासनारूढ़ होने का समय।

संगीत

वाचक : हुमायूंशाह जब गढ़ गिर मरो, हेमू राज राजन भयो।

कथाकार : दिल्ली ने सैकड़ों वर्षों बाद एक धर्म-निरपेक्ष हिन्दू शासक पाया। भारतीय इतिहास में सात अक्तूबर पन्द्रह सौ छप्पन का दिन स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाने योग्य है। अब हेमूशाह भारत का सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य हुआ।

छठा दृश्य

(**हेमू का दरबार**) नर्तक-नर्तकी शोरभीय नृत्य करते हैं। हेमू उन्हें इनाम देते हैं। हिन्दू, मुसलमान सामंत

उन्हें आदर-सत्कार देते हैं। दृश्य समाप्त।

वाचक : तू धन्य-धन्य सेनानी, हिन्दू, मुस्लिम का भाई, अफगानों में जय पाई। तब हथेली पर रख ध्वजा फहराई, अकबर से पहले दिल्ली का वो प्रधान शासक था। आसपास दिल्ली पर जिसका अखंड शासन था। अकबर ले बैराम खां को चढ़ आया। दिल्ली का हिन्दू था। साम्राज्य देश का हेमू भाग्य विधाता, काबुल तक जिसके नाम से था थर्राता, हेमू ने तुरन्त युद्ध साज सभी सजवाये। पानीपत के मैदान के बीच रण के छक्के बजवाये।

सातवां दृश्य

[युद्ध के बाजों का तुमुल नाद, सिलहुट पर तमाम राजाओं-सैनिकों के दृश्य उभरते हैं। हेमू सामने खड़ा होकर उद्‌बोधन दे रहा है।]

हेमू : आज देश की आनबन पर जो आये खो जाये। देता हूं रण आक्रमण सावधान हो जाओ। जननी जन्मभूमि पर संकट, आकर इसे बचाओ, अकबर ले बैराम खान को चढ़ आया। दिल्ली पर स्वयं संभालो शासन अपना अपनी इस दिल्ली पर, यदि दिल्ली पर विजय फतह मुगलों की फहराई, स्वयं समझ लेना परतंत्रता फिर सब कर आई, आओ हम सब मिलकर आक्रमणकारियों को लूटें, स्वयं हृदय से धूल मिला दें अपनी-अपनी फूटें, मैं भारत का सेवक हूं, सेवा मुझको करना है और नहीं तो स्वामिभक्ति के लिए हमें लड़ना है।

[युद्ध स्वर संगीत मंच पर दृश्य खुलता है।]

आठवां दृश्य

[मंच पर कुछ राजा इकट्ठे हैं परस्पर बाते करते हैं।]

पहला : हेमू का रण आक्रमण का हम सब राजा हुए इकट्ठे।

दूसरा : तभी कर रहे ठटा-ठटा, ठटे सब का हंसना **(हेमू अलग खड़ा सुन रहा है)**

तीसरा : कल तक रसद बेचने वाला राजा बना फिर रहा है हेमू।

पहला : हम राजपूत हैं।

दूसरा : हमारा और हेमू से क्या मुकाबिला।

तीसरा : हम क्यों जायें हेमू की तरफ से लड़ने।

पहला : अपने आपको सेवक कहता है।

दूसरा : बगुला भगत।

तीसरा : अरे हम खुद तलवार से लड़कर दिल्ली फतह करेंगे।

पहला : दिल्ली का राज्य लेंगे।

तीसरा : मैं हेमू का तख्ता उलट दूंगा।

[अहंकारपूर्ण हंसी। हेमू सामने आकर]

हेमू : यह क्या देख रहा हूं? यह क्या सुन रहा हूं? बन्द करो यह शर्मनाक हंसी। बैराम खां को लेकर अकबर दिल्ली पर चढ़ाई करने आ रहा है। मुगल सेना, राजपूत, ब्राह्मण, अफगान, तुर्क में भेद नहीं करेगी। तुम सब अपने अहंकारों में बटे हुए स्वार्थी लोग, राजपूत कहते हो अपने-आपको। मंदमत, देखते नहीं, जहां एकता है वहीं है वीरता। जहां है बलिदान, वहीं है एकता।

पहला : अकबर से अकेले लड़ूंगा।

दूसरा : तेरे कहने से नहीं लड़ेंगे।

तीसरा : तू क्या समझे राजपूत की शान।

हेमू : याद रखना अगर पानीपत की इस लड़ाई में तुम राजपूतों ने मेरा साथ नहीं दिया तो भारत माता तुम्हें

कभी नहीं क्षमा करेगी। सुनो···सुनो। कान खोलकर सुन लो। हेमू की जीत भारत माता की विजय होगी। मेरी हार सबकी हार होगी। यह स्वतंत्र जीवन फिर वापस नहीं मिल सकता। पछताने के आंसुओं से प्रायश्चित के पौधे में पाप का फल लगता है। आओ, चलो मेरे साथ, भूल जाओ सारे मतभेद, जला दो अपने-अपने अहंकार को। भारत माता की पुकार सुनो। भारत माता की···

सब : जै।

हेमू : भारत माता की।

सब : जै।

हेमू : चलो, आगे बढ़ो।

[सब हेमू के साथ जाते हैं, पृष्ठभूमि में युद्ध भूमि का प्रभाव, सिलहुट पर दृश्य उभरते हैं]

वाचक : महावीर हेमू के उर में न दम्भ, न स्वार्थ, न छल था। वीरों का वीर जिसे बस अपनी बलि का बल था। अब भी हेमू का जीवन यह हमको बतलाता, हेमू का बलिदान आज भी जीवन-ज्योति जगाता।

नवां दृश्य

[सारे सामंत, सैनिक हेमू का झंडा लिए मंच पर आते हैं। हेमू के पिता पूरनमल साधूभेष में गाते हुए आते है।]

नवलदास जी कीन्हीं दाया,
हेमू ने, हेमू ने
नष्ट होत भृगवंश बचाया

वाचक : वह शौर्य पराक्रम तेरे
वीरों का बाना बनते

यश की ले साथ पताका
दशदिशि में बढ़ती जावे।

सब : हेमू तेरी यह विजया
युग-युग तक गान सुनावे
[सब उस झंडे को पकड़ एकाकार होते हैं।]

वाचक : सदा-सदा हेमू का जीवन
यह हमको बतलाता
हेमू का बलिदान आज भी
जीवन-ज्योति जगाता।

लड़कियां

चरित्र

पांच नौकरानी
पांच लड़कियां

[होस्टल का बड़ा कमरा। पांचों नौकरानियां झाड़ू-पोंछा, फ़िल्ट, सफाई, कपड़े पर आयरन करते हुए दिखती हैं। सब अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं। पहली लड़की आती है—नाइट गाउन में।]

पहली लड़की : ऐ इधर-उधर क्या देखती है ? सारा काम पड़ा है अब तक। कामचोर कहीं की। अब तक कुछ भी नहीं किया। कहीं कोई सफाई नहीं। फर्श अब तक गन्दा। टेबुल कुर्सी पर इतनी धूल। जब तक कोई सिर पर सवार नहीं, कहीं कोई काम नहीं। नमकहराम कहीं की। तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है। मेरी 'बेड टी' इतनी ठंडी क्यों थी ? निकाल बाहर करा दूंगी। मेरा सूट आयरन हुआ ? क्या आयरन करती है—बेवकूफ कहीं की। जरा भी सऊर नहीं।

[कपड़ा लेकर चली जाती है। सारी नौकरानियां एक स्वर में।]

सब : **(दर्शकों से)** हम नौकरानियां,
लड़कियां नौकरानियां।
ये साहबजादियां,
हम नौकरानियां।

पहली नौ० : इनका काम है गन्दा करना मेरा काम सफाई। इनका काम है गाली देना कौन करे लड़ाई।

सब : हम नौकरानियां,
लड़कियां। नौकरानियां।
ये साहबजादियां,
हम नौकरानियां॥

[दूसरी लड़की निकलती है तौलिया लपेटे।]

दू० लड़की : बत्तमीज। कामचोर। मुझे देखा तो काम पर लग गयी। क्या बातें कर रही थी ? किससे ? हर वक्त बातें-बातें-बातें। और हमारी नकल। हम क्या पहनते हैं, क्या खाते हैं, कहां जाते हैं, किनसे मिलते हैं, सब पर इनकी निगाह। चोट्टी कहीं की। देखो यह शीशा, अब तक कित्ता गन्दा पड़ा है। इससे हम अपना 'मेक-अप' कैसे करेंगे ? पाउडर लगाकर साफ करो। सफाई के लिए ही साबुन, पाउडर दिया जाता है। मालूम है तुम लोग इसे बचाकर बेचती हो और छिप-छिपकर सनीमा देखती हो। किसी दिन पकड़ लिया तो सीधे पुलिस के हवाले। मेरा कपड़ा कहां है ? कपड़ों पर आयरन कर रही हो या अपना सिर फोड़ रही हो। **(कपड़े लेकर)** यही किया है आयरन। एक भी सिलवट नहीं गयी। नमकहराम। जल्दीसे सफाई खत्म करो। नाश्ता लगाओ फटाफट हमारे पास वक्त नहीं।

[कपड़े लेकर चली जाती है। सब फिर एकसाथ गाती हैं।]

सब : हम नौकरानियां,
लड़कियां नौकरानियां।
ये नवाबजादियां,
हम नौकरानियां॥

दू० नौकरानी : हम दोनों के दो संसार।

केवल नफरत नहीं है प्यार।
साहबजादियां रोब जमाती,
कहां को गुस्सा कहां दिखातीं।

सब : ये साहबजादियां,
हम नौकरानियां।
ये नवाबजादियां,
हम इनकी बांदिया।।

ती० नौकरानी : ये अपने को मार्डन कहतीं,
अपने हाथ कुछ नहीं करतीं।
ये कहतीं विद्रोह करेंगे,
नारि मुक्ति के कदम बढ़ेंगे।।
क्या हम नारी नहीं ?

सब : ये साहबजादियां,
हम नौकरानियां।
ये नवाबजादियां
हम इनकी बांदियां।।

[तीसरी लड़की आती है—बहुत जल्दी में है।]

ती० लड़की : कहां है मेरी लिपस्टिक ? ओ-हो खड़ी-खड़ी मेरा मुंह क्या देखती हो ? अभी तक यह शीशा साफ नहीं। पोंछो इसे। फिल्ट करो इस जगह। कितनी बदबू फैला रखी है। जानवर बीस्ट। मेरे कपड़े क्या देख रही हो ? लालची। नकलची। हटो मुझे 'मेकअप' करने दो। हट जाओ यहां से। मनहूस कहीं की। झटपट नाश्ता लगाओ। टोस्ट, आमलेट, मिल्क, कार्नफ्लैक, अंडे, काफी···।

[सब जाती हैं। तीसरी लड़की आइने के सामने अपने 'मेकअप' में लगती है। चौथी आकर 'मेकअप' कराती है। पहली दूसरी लड़की आकर पहले कमरे की सफाई देखती हैं फिर वे भी मेकअप में लग जाती हैं। पांचों नौकरानियां हाथ में प्लेट, चम्मच लिए आती हैं। चम्मच से प्लेट बजाती हुई।]

सब : घिसो घिसो और घिसो,
रंगों रंगों और रंगों।
कसो कसो और कसो,
फंसो फंसो और फंसो।

चौ० लड़की : 'इडीयटस।' नाश्ता लगाओ।

ती० लड़की : मुझे क्या घूर रही है। बत्तमीज।

[चारों लड़कियां पूरे 'मेकअप' कर चलती घूमती हैं।]

लड़कियां : हाय। हाऊ स्मार्ट।

नौकरानियां : थैंक्यू।

[सब लड़कियां हंस पड़ती हैं।]

दू० लड़की : ऐ छोकरी। हिन्दी डिक्शनरी लाओ।

प० लड़की : क्या ?

दू० लड़की : हिन्दी डिक्शनरी नहीं जानती बेवकूफ। मेरी आलमारी में जहां जूते रखे है उसी में एक मोटी भद्दी-सी किताब है।

पां० लड़की : क्यों तकलीफ करती हो, मैं बता दूं—विघ्न माने 'डिस्टरबेंस'।

दू० लड़की : तो तुमने 'डिस्टरबेंस' क्यों नहीं कहा ?

पां० लड़की : हमारे कन्ट्री का प्राबलम यही है कि थोड़े-से ही लोग अंग्रेजी जानते और बोलते हैं, बहुत-से लोग आई मीन नाइन्टी परसेन्ट लोग अंग्रेजी जानते ही नहीं। फिर इस डैम कन्ट्री का प्रोग्रेस कैसे होगा ?

['मेकअप' ठीक करने लगती है।]

दू० लड़की : अब हम रेडी हो गया, जायेगा।

ती० लड़की : मैं कैसी लगती हूं ?

प० लड़की : किलिंग फैन्टास्टिक।···मैं कैसी···?

ती० लड़की : ए गर्ल आज मोटरसाइकिल।

[नौकरानियां हंस पड़ती हैं।]

प० लड़की : शटअप। क्यों हंसी? तुम्हारी यह हिम्मत, हमारे सामने हंसो। हमारी बातों पर हंसो। मत्तमीज। इतना दिमाग खराब हो गया है। चलो, कान पकड़ कर दीवार के पास खड़ी हो जाओ। चलो। आई मीन चलो।

[सब कान पकड़कर खड़ी होती हैं।]

दू० लड़की : दीवार के सहारे नहीं। दीवार से अलग। आई से— दीवार गन्दी हो जायेगी। आंख नीची। और नीची। कहीं रोजी-रोटी का ठिकाना नहीं था, भीख मांगती आयी थी, हमने 'पिटी' करके नौकरानी बना लिया तो दिमाग खराब हो गया।

[सारी लड़कियां टेबुल पर लंच लेने लगती हैं।]

प० लड़की : मिस ज्योति शर्मा, मैंने आपको कई बार मेंसन किया है। कुछ टेबुलमैनर्स होते हैं। सबसे पहले आप खाना शुरू कर देती हैं। कांटे छुरी का इस्तेमाल नहीं करती। डर्टी हैंड से खाने लगती हैं। 'माउथ शट' करके नहीं खातीं।

पां० लड़की : शान्त हो जाइए बहनजी। आइए पहले आराम से नाश्ता कीजिए।

प० लड़की : (**बैठती हुई**) व्हाट बहन जी। आई एम नाट बहन जी। यू० आर० हेल बहन जी।

पां० लड़की : यस आई एम बहन जी।

प० लड़की : यू एक्सेप्ट?

पां० लड़की : जी हां, मैं स्वीकार करती हूं।

प० लड़की : आई मीन यू एक्सेप्ट?

पां० लड़की : स्वीकार।

पं० लड़की : व्हाट सबीकार?

पां० लड़की : स्वीकार।

दू० लड़की : प्लीज, कीप क्वाइट।

[सारी लड़कियां नाश्ता कर रही हैं।]

दूसरी नौ० : बाप रे कितना खाती हैं।

तीसरी नौ० : बाहर जाकर भी खाती रहेंगी। कभी इसके साथ कभी उसके साथ।

चौथी नौ० : कैसी चभर-चभर खा रही हैं। जी होता है कि मुंह नोच लूं। देखो-देखो मुंह कैसे बना रही हैं। किसी लायक मुंह होता तो और···।

पांचवी नौ० : इनके खाने में तो ज़हर मिला देना चाहिए।

पहली नौ० : हे मुहजली, जिसका नमक खाती है, उसे इस तरह बद्दुआ देती है रे कलमुही।

पांचवी नौ० : तू चुप रह।

चौथी नौ० : तू चुप रह।

[सब झगड़ पड़ती हैं। सारी लड़कियां केवल पांचवीं छोड़, खड़ी हो जाती हैं।]

सब : (**एकसाथ**) यह क्या हो रहा है?

पहली नौ० : आप लोग नाश्ता कर रही हैं न, हम लोग मंगलगीत गा रही हैं।

सब : व्हाटिज दिस मंगलगीत?

पां० लड़की : भारतीय संस्कृति में ऐसी परम्परा है···

प० लड़की : ओ हो, सीधी जबान में बोलो।

पां० लड़की : गेस्ट लोग जब ईटिंग करते हैं तो होस्ट के हाउस की औरतें म्युजिक गाती हैं।

सब : ओ फाइन। वेरी फाइन। सिंग, सिंग, सिंग।

[सारी लड़कियां फिर खाने लगी हैं। नौकरानियां गा रही हैं।]

टेढ़ी अंधी आंख पै लगा कै कजरा।
आंख न दीदा खांय मलीदा

टेढ़ी अंधी आंख पै लगावै कजरा।
बिल्ली खाये चूहा
पेट भरे ना मूआ
टेढ़ी अंधी आंख पै लगावै कजरा।
जितनी बड़ी भूख
उतना बड़ा पेट
जितना बड़ा पेट
उतना छोटा गुस्सा
टेढ़ी अंधी आंख पै लगावै कजरा।

सब : दैटस आल, दैटस आल। स्टाप, स्टाप, स्टाप।

[सब के हाथ में नौकरानियां हाथ मुंह पोंछने को तौलिए देती हैं।]

प० लड़की : यह फोकस म्यूजिक था या लोकल ?

पां० लड़की : न फोकस न लोकल···

दू० लड़की : ओह इट वाज बोकल।

[सब नौकरानियां प्लेट, मेज आदि की सफाई में लग गयी हैं। लड़कियां आइनों में अपना 'मेकअप' ठीक करने में लगी हैं।]

पां० लड़की : बड़ा तेज जमाना है
सब को अलग-अलग जाना है
सब की अपनी-अपनी लड़ाई है
विजयी होकर आना है।
अपने-आप से भयभीत
इसलिए सब से डरी है।
हम सब अलग-अलग इतनी सेल्फकांशेस
घर कभी थोड़ा रुककर जाना नहीं
अपना वह 'सेल्फ' क्या है
केवल 'सेल्फकांशेस'
तभी इतना गुस्सा भरा है।

इतनी तेज जिन्दगी होती चली जा रही है।
पर है कौन वह हांकने वाला
यह हम पूछते नहीं
पूछने के लिए ज़रा ठहरकर देखना होता है
पर ठहरे कि पिछड़ जायेंगे
इस तेज़ दौड़ में हार जायेंगे
हम सब अलग-अलग भयभीत हैं अपने-आपसे
यह राज़ केवल वही हांकने वाला जानता है
हमें अपना पता नहीं है
तभी इतनी नफरत है
इतना अहंकार है।
हर दूसरा मेरा शत्रु है क्योंकि वह मेरा 'कम्पटीटर' है
वह मेरा अपना नहीं है
क्योंकि मैं अपना नहीं हूं।
पर फिर भी कहीं कुछ रुकता नहीं
और हम केवल चाहते हैं—
उस भय ने केवल दो इच्छायें पैदा की हैं
सुरक्षा और स्वतंत्रता
मतलब शादी और नौकरी
हर कोई उसी की तलाश में है
इसलिए हर कोई दूसरे से भयभीत है
और एक दिन सचमुच ऐसा हो जाता है
सारी लड़कियां नौकरी भी पा जाती हैं
और एक-एक दूल्हा भी
सच है जिन खोजा तिन पाइयां
जो चाहोगे वही जरूर मिलेगा—
यह सत्य न सही पर फैक्ट है।
पर यह भी सच है कहीं कुछ रुकता नहीं
एक फैक्ट दूसरे फैक्ट को जन्म देता है

जब शादी हुई तो बच्चा जन्म लेता है
ऐसा हुआ लड़कियों की जिन्दगी में
ऐसा ही हुआ नौकरानियों की जिन्दगी में
हां, कहने को ही सब अलग-अलग हैं
जिन्दगी तो बस एक ही एक ही वसूल है
पर मानता कौन है, यही तो भूल है
लड़कियां हो गयीं माता, नौकरानियां हो गयीं आया
और इन दो के बीच आ गया एक तीसरा।
दो नफरतों के बीच क्या भविष्य पलेगा ?
दो रातों के बीच क्या सूरज उगेगा ?

[इस बीच मंच से लड़कियां, नौकरानियां चली गयीं और अब पहली लड़की पहली मां बनकर आती है। पीछे-पीछे पहली नौकरानी आया बनकर आती है। उसके अंक में मालकिन का बच्चा (प्लास्टिक या रबर का गुड्डा) है। बच्चा बेतरह रो रहा है।]

प० आया : मालकिन। बच्चा रो रहा है।

पं० मा : नालायक कहीं की। मैंने कित्ती बार कहा—मत कह मुझे मालकिन···।

प० आया : मेम साहब, आपका बच्चा रो रहा है।

पं० मा : बच्चा नहीं बेबी, बेवकूफ कहीं की। ले जा इसे अन्दर। मेरे दफ्तर पहुंचने का समय हो गया है। यह रोता है तो किसलिए है तू नमकहराम ?

प० आया : हे मेमसाहब, जबान संभालि कै बोला करो हां। अब हम नौकरानी नहीं, आया हैं। तुम एक बेबी की मम्मी हो तो मैं तीन बेबी की मदर हूं, हां।

प० मा : तो ?

प० आया : बेबी का रोना हमसे नाहीं सहा जाता—बेबी किसी का क्यों न हो, हां।

प० मा : तो इसे चुप करा न।

प० आया : जरा गोद में ले लो चुप हो जायेगा।

प० मा : और मेरा कपड़ा गन्दा हो गया तो ?

प० आया : अभी छू-छू कर लिया है। गन्दा नहीं करेगा मेरा राजा, बहुत छमजदार है।

[मां की गोद में दे देती है।]

प० आया : देखो कैसा चुप हो गया मेला लाजा। जला प्याल कल्लों ना।

प० मा० : छी: छी: छी: गीला कर दिया मेरा कपड़ा। सुअर ! **(फर्श पर रख देती है। आया झट उठा लेती है)** ले जा इसे अन्दर। कपड़े बदलकर सुला दे। नहीं सोना तो रोने दे। रोते-रोते सो जायेगा। अकेली क्या मेरी ही जिम्मेदारी है। खड़ी-खड़ी मेरा मुंह क्या देख रही है ? ले जा इसे मेरी आंखों के सामने से। सुन! बेबी को भूखा रखा तो सिर तोड़ दूंगी तेरा। मुझे पता है तू चोट्टी है अव्वल दरजे की। बेबी का 'मिल्क' चुराकर अपने बच्चों को पिलाती है। खबरदार तेरे बच्चे जो मेरे घर में घुसे।

[तेजी से चली जाती है। बच्चा रोने लगता है। बच्चे को फर्श पर रखकर डांटती-डराती है।]

प० आया : ऐ चुप रहता है कि नहीं ? मारूंगी वह लप्पड़ कि जाय गिरोगे काली के खप्पर।

[भीतर से दूसरी मां निकलती है।]

दू० मा० : ऐ क्या शोर मचा रखा है। ले जा यहां से।

[प० आया बच्चे को हाथ से टांगे लिए जाती है। दू० आया इसके बच्चे को लेकर आती है।]

दू० आया : मेमसाहब, बेबी को बुखार है।

दू० मा० : डाक्टर को फोन कर दिया है। जो दवा देंगे, पिला कर सुला देना। बेबी को घर में बन्द कर कहीं खिसकना नहीं। अगर ऐसा किया फिर, दो बार माफ कर चुकी

हूं, और बर्दाश्त नहीं करूंगी। सीधे पुलिस के हवाले करूंगी तुझे। नालायक, बेबी को बुखार तेरी बेवकूफी की वजह से आया। दफा हो यहां से। मुझे देर हो गयी।

दू० आया : मेम साहब, 'मदर इन ला' जी को फोन कर दूं ? वह फट आ जायेंगी। नहीं तो बेबी को बहुत तकलीफ होगी। नहीं तो 'फादर इनला'···

दू० मा : खबरदार। कोई 'मदर इन ला' 'फादर इन ला' नहीं। यहीं आकर डेरा जमा देंगी। फिर मेरा सांस लेना हराम कर देंगी।

[तेजी से चली जाती है। आया बेबी को गोद में लिए वहीं खड़ी रह जाती है। भीतर से तीसरी मां बिगड़ी हुई निकलती है।]

ती० मा० : हरामजादी। मेरा 'फूड' खा-खाकर मोटी हो रही है। मेरा 'कास्मैटिक्स' इस्तेमाल कर हेमामालिनी बनना चाहती है। सारे नौकरों से इश्क करती घूमती है। अब तक तीन-तीन मर्द किए हैं तूने। (**ती० आया बच्चे को अंक में लिए आ खड़ी है।**) निकल जा मेरे घर से। तू समझती क्या है, जब मैंने अपने नालायक 'हस्बैन्ड' को घर से निकाल दिया तो क्या है तू ?··· बत्तमीज, तू मेरी नकल करती है ? मेरे कपड़े पहन बाजार में घूमती है। मेरी बराबरी करती है ?

ती० आया : मेम साहब, एक बार और माफ कर दीजिए।

ती० मा : निकल जा मेरे घर से अभी फौरन इसी वक्त दफा हो जा।

ती० आया : आखिर मेरा कसूर क्या है ?

ती० मां : तू मुझसे ज्यादा जवान और खूबसूरत क्यों समझती है ?

ती० आया : हाय दइया। यह क्या सुन रही हूं। इसके 'हसबेंड' इतने सीधे और नेक हैं बेचारे कि मुझसे ठीक से जो बात कर लेते हैं, वह इसके लिए इतना बर्दाश्त के बाहर है। इसे अपने-आप पर भरोसा नहीं।

ती० मा : क्या बड़बड़ा रही है ?

ती० आया : ठीक है। मैं जा रही हूं। लो सम्हालो अपना बेबी। पर सब भंडाफोड़ कर दूंगी।

ती० मा० : क्या ? तू खड़ी यहां कर रही है ? भागती है या···।

[दूसरी आया भागती है।]

ती० आया : समझ लो मेमसाहब, कह दूंगी सब।

ती० मा० : ओ हो मेरे कहने का यह मतलब थोड़े ही था कि तुम सचमुच चली जाओ। मैं तो तेरा इम्तहान ले रही थी कि तुझे किस्ती देर में गुस्सा आता है। अरे तेरे बिना मैं कैसे रह सकती हूं। चल पिक्चर चलते हैं।

ती० आया : नहीं।

ती० मा० : अच्छा चल गोलगप्पे खायेंगे।

ती० आया : नहीं।

ती० मा० : अच्छा, अब तुझे कभी नहीं डाटूंगी ?

ती० आया : नहीं।

ती० मा० : अच्छा अब तुझे किसी चीज के लिए मना नहीं करूंगी। चल मार्केट घूमने चलते हैं।

ती० आया : और बेबी ?

ती० मा० : इसे मिस ज्योति शर्मा के 'होम' में छोड़ आ। जा खड़ी क्या है ? मैंने उसे 'डेट' दिया है।

ती० आया : किसे ?

ती० मा० : उसे।

ती० आया : नम्बर चार।

ती० मा० : शी ४४···

[आया बच्चे को लिए तेजी से दौड़ती है। मंच के एक किनारे 'होम फार चाइल्ड' दिखता है। मिस ज्योति

शर्मा बच्चों के साथ खेल रही है। आया को देखते ही···]

ज्योती : ओ हो। बच्चे को लेकर इत्ता तेज नहीं दौड़ते।

ती० आया : यह मेरा बच्चा थोड़े ही है। मैं तो नौकरी करती हूं। लो सम्हालो इसे। शाम को सात बजे ले जाऊंगी। टा-टा।

[जाती है। दृश्य में ज्योति बैठे हुए गुड्डों से घिरी हुई है।]

ज्योति : मेरे प्यारे बच्चे। नहीं, नहीं, तुम्हें गुड्डे-गुड्डी नहीं कहूंगी। जो तुम हो मैं वही कहूंगी। जो मैं हूं मैं वही रहूंगी। प्यास लगे तो पानी दूंगी। भूख लगे तो दूध पिलाऊं। नींद लगे तो अंक सुलाऊं। रोओगे तो गोद खिलाऊं। किस्सा सुनो या गीत सुनाऊं? किस्सा भी औ गीत भी? वाह भाई वाह। किस्सा भी औ गीत भी। वाह भाई वाह। **(अभिनंदन करती हुई)** एक था जंगल। हां भाई जंगल। बहुत बड़ा जंगल। यह शहर भी तो जंगल है। घना अंधेरा। कभी न होता। जहां सवेरा। जंगल में चिड़ियां रहती थीं—तरह-तरह की चिड़ियां—अलग-अलग चिड़ियों के झुंड। हर चिड़िया की अपनी भूख। हर चिड़िया का अपना भय। हर चिड़िया की अपनी बोली—चीं, पीं, कू कू, टीपू, क्याऊं, क्याऊं, चूं चूं, के० के०, पें पें, चिक्किर चिक्किर, पी पी कूअ् कूअ्। हर चिड़िया के अपने पंख। अपनी चाल फुर फुर फुर्र···फुर्रर···सायं सूं···सुर्रर···फड़फड़ फड़फड़। बच्चों को छोड़ चली जाती चिड़ियां। जंगल में सांप अजगर रहते। आसमान में बांझा शिकारे, चील्ह झपट्टे कौए पंख, बच्चों पर लगाए आंख। सो सारे बच्चे डरे-डरे, भूख-प्यास से मरे-मरे। एक दिन एक चिड़िया आयी सतरंग पंखी वाली। लगी एक गीत सुनाने।

[गा पड़ती है।]

गाओ गाओ गुन गुन
खेलो खेलो चुनमुन
डरो काहे डरो काहें
आवो मेरी खुली बाहें
रामजी का जंगल
सीता फुलवारी
सब मेरे चुनमुन
मैं महतारी।
आवो आवो मेरे मुन
गाओ गाओ गुनगुन
खेलो मेरे चुनमुन

ज्योति : तो सारे बच्चे आ गए उसके पास। अब कोई न रहा उन्हें डर। अनेक से सब हो गए एक। सब गये आपस में मिल। जैसे एक हो गया दिल। सब के प्राण गये खिल। शाम को जब चिड़ियां आयीं। दौड़ी आयीं बच्चों के पास। हाय राम इतने बच्चे। इसमें कौन है मेरा बच्चा? मैं तो उसे पहचानती भी नहीं। हाय दइया कैसे पहचानूं। लड़ने लगीं चिड़ियां आपस में, यह मेरा बच्चा···नहीं यह मेरा बच्चा···चुप रह यह मेरा बच्चा···।

[सारी मातायें आकर इसी तरह बच्चों की झीना-झपटी करना शुरू करती हैं। आपस में लड़ने लगती हैं।]

ज्योति : यह क्या करती है? कोई मां भला ऐसा करती है? जनने से ही क्या जननी होती है? जो पाले वही मां होती है। जाओ अपनी-अपनी आया को भेजो। वही करें शिशु की पहचान।

[सारी आयायें आती हैं। मातायें उन्हें डांटना शुरू

करती हैं।]

मातायें : उठा मेरे बच्चे को। पहचान मेरे बेबी को। चल जल्दी कर। बत्तमीज कहीं की। कहां थीं अब तक ? कमाल है मेरे बेबी को नहीं पहचानती। इसीलिए तनखाह देती हूं ?

[सारी आयायें बच्चों की पहचान में परस्पर लड़ने लगती हैं। मातायें अलग आपस में झगड़ रही हैं। फिर सब आपस में लड़ने-झगड़ने लगती हैं। एक बिन्दु पर आकर सभी मूर्तिवत चुप हो जाती हैं ज्योति बच्चों के बीच में गाती है।]

गाओ गाओ गुन गुन
खेलो खेलो चुनमुन
रामजी का जंगल
सीता फुलवारी
सब मेरे चुनमुन
हम महतारी।

[शेष सब इसी गीत में शामिल होती हैं और सारे बच्चों के बीच में बैठती जाती हैं।]

हम ना साहबज़ादियां···
हम ना नौकरानियां
सब हैं एक नारियां
फूल भरी क्यारियां।

[पर्दा]

मैं और मैं

मैं : कौन ?

मैं : मैं। और तुम ?

मैं : मैं। कमाल है, एक ही जगह दो मैं कैसे ! ···
क्या कहा ? कौन हो तुम ?

मैं : मैं !

[हंसने लगता है।]

मैं : शी···'कीप क्वायट डोन्ट डिस्टर्ब मी' !

मैं : ओह ! तो अपनी जबान से भाग कर अब दूसरे की जबान में मुझ पर रौब डालना चाहते हो। यार आज तो अपनी भाषा-बोली में दो चार बात हो जायं। ओह ! मुझे घूर रहे हो। मैं देहाती भेष में हूं इसीलिए ?

मैं : तुम दिल और दिमाग से भी देहाती और गांव गंवई के हो, वरना इस तरह···

मैं : भई जब गुस्सा करते हो तो बिल्कुल नादान बच्चे हो जाते हो।

मैं : देखो, मेरे बिस्तरे पर पांव मत रखो।

मैं : इसलिए कि तुम भाग न जाओ।

मैं : बकवास बंद करो।

मैं : अच्छा, तुम्हीं कोई बकवास शुरू करो। यकीन करो मैं तुम्हारी बकवास सुनने का पिछले अड़तालीस सालों

से आदी रहा हूं।

मैं : कौन हो तुम ?

मैं : यार अब तो पहचान जाओ।

मैं : ओह तो तुम हो।

मैं : हां मैं ही हूं।

मैं : पर मैं भी तो मैं हूं।

मैं : हां देख रहा हूं। जिस क्षण से तुम मैं हुए तभी मैं भी हुआ। एक मैं दूसरे मैं को देख रहा है। तभी तो तुम लेखक हुए। देखो देखो उठो नहीं। जहां जैसे हो उसी तरह वहीं बैठे रहो। अपने लेखक का नाम सुनते ही उठने लगे। फिर दौड़ने लगोगे, फिर आसमान में, हवा में, अतीत में न जाने कहां कहां उड़ने लगोगे। आज यहां से भागने नहीं दूंगा हां।

[हंसता है।]

मैं : तो इसमें हंसने की क्या बात है ?

मैं : अच्छा जी, तो पहले वजह ढूंढते हो फिर हंसते हो। पढ़ने-लिखने का यही असर हुआ है तुम पर। यार कभी-कभार यूं ही हंस लिया करो।

मैं : अपनी झेंप छिपाने के लिए जैसे लेखक लोग अचानक ठहाका मारकर हंस पड़ते हैं—अपनी हीनता, नपुंसकता छिपाने के लिए, भीड़ का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए ? जी नहीं, मैं ऐसे नहीं हंसता। मैं तभी हंसता हूं जब मुझे खुद हंसी आती है।

मैं : बड़े तीसमारखां हो।

मैं : सो तो हूं।

मैं : किस के लिए ?

मैं : अपने लिए।

मैं : अच्छा, अब तक कितने प्यार मुहब्बत किए ?

मैं : तुम तो सबकुछ जानते हो।

मैं : जानता तो हूं, पर यह जानना चाहता हूं कि तुम भी 'जानते' हो कि नहीं।

मैं : जहां जिससे जितना प्यार किया है, उतना ही हूं मैं—बल्कि वही हूं मैं। जो जितना जहां नहीं कर पाया उसी की याद आती है। वही लिखना पड़ता है।

मैं : मेरी याद नहीं आती ?

मैं : तुम्हें मेरी याद आती है ?

मैं : सवाल मेरा था।

मैं : तुम में और मुझ में कोई फर्क है क्या ?

मैं : यह अपने इंसान की भाषा बोल रहे हो या अपने लेखक की ?

मैं : मैं पहले बंटा था अब एक हूं।

मैं : फिर मुझे पहचाना क्यों नहीं ?

मैं : देखना चाहता था कि तुम में अभी कितना दम बाकी है।

मैं : मतलब ?

मैं : तुम मुझ से बातें कर सकते हो या नहीं।

मैं : अच्छा।

मैं : और बातें भी क्या करोगे।

मैं : अब क्या लग रहा है ?

मैं : तुम बातें कर सकते हो। मतलब हम बातें कर सकते हैं।

मैं : 'यक्षप्रश्न' नाटक में तुम्हारी मुझ से बहुत अच्छी बातें हुई हैं। अच्छा, अब तुम मुझ से कोई बात करो।

मैं : क्यों, बात तो मुझ से तुम करने आये थे।

मैं : बात माने प्रश्न नहीं। बात माने बात···परिचय··· एक समान हो जाना···देखने लग जाना।

मैं : तुम तो मुझे सदा से देखते रहे हो।

मैं : अब तुम भी मुझे देखो।

मैं : देख रहा हूं।
मैं : क्या ?···ऐं कोई बात करो।
मैं : देखने दो।
मैं : देखकर तुम रोने लगोगे।
मैं : हां, मैं एक जवान लड़की हूं।
मैं : और मैं एक जवान लड़का हूं।
मैं : आओ चलो कहीं घूम आयें।
मैं : इसकी अब कोई ज़रूरत है ?
मैं : बड़े खतरनाक आदमी हो। मैं जा रहा हूं।
मैं : सच, क्या तुम जा सकते हो ?
मैं : क्यों नहीं, देखो···यह देखो···अरे तुम भी साथ-साथ चलने लगे।

[दोनों की हंसी]

मैं : अच्छा यार सच-सच बताओ, अभी कितनी देर है ?
मैं : यार अभी बहुत देर है।
मैं : मतलब···।
मैं : कोई खूबसूरत चीज़ देखता हूं तो अब भी मुंह में पानी आ जाता है। आंखें भर आती हैं।
मैं : यह चक्कर कब पूरा होगा ?
मैं : यह चक्कर नहीं यही हूं मैं।
मैं : मैं ?
मैं : जो मैं हूं···जो कुछ···जितना जैसा···वही हूं मैं।
मैं : वही तो मैं हूं।
मैं : नहीं, वह तुम नहीं हो, तुम कुछ और बनना चाहते हो जो तुम नहीं हो।
मैं : जो मैं नहीं हूं क्या मैं वह बन सकता हूं ?
मैं : बन तो सकते हो, पर हो नहीं सकते।
मैं : यह तुम्हारा फैसला है ?
मैं : मैं फैसला नहीं देता--स्वीकार करता हूं।

मैं : तो क्या तुम महान् नहीं बनना चाहते ?
मैं : यही है तुम्हारा मैं। मेरा मैं यह नहीं है।
मैं : क्या है ?
मैं : जो है।
मैं : क्या है ?
मैं : जो मैं जीता हूं।
मैं : मैं जी सकता है अब भला ? मैं या तो अतीत में रहता है या भविष्य में···।
मैं : आओ चलें, एक कप चाय बनायें साथ-साथ और चुप-चाप पीयें साथ-साथ।
मैं : क्यों शराब क्यों नहीं ?
मैं : शराब तो किसी और की बनाई हुई रखी है, बस ढाल कर पी ले जाना है। चीज़ अपने हाथ से बनाई जाय, उसी का आनन्द लिया जाए।
मैं : पीकर ?
मैं : नहीं जीकर।
मैं : जीना इतनी छोटी-सी चीज़ है ?
मैं : तभी तो तुम महान् बनने के चक्कर में हो।
मैं : महानता का मज़ाक क्यों उड़ा रहे हो ?
मैं : तुम्हें ऐसा लगता होगा क्योंकि तुम्हें जिन्दगी छोटी-सी चीज़ लगती है।

[दोनों मैं हंसते हैं।]

मैं : अच्छा, यह बताओ तुम लाल हो या मैं ?
मैं : मैं लक्ष्मी नारायण लाल हूं।
मैं : मैं भी लक्ष्मी नारायण लाल हूं। और तुम ?
मैं : दो कैसे एक हो सकता है ?
मैं : तुम लक्ष्मी नारायण लाल की जगह कालिदास क्यों नहीं हो जाते। चलो आज से मैं तुम्हें इसी नाम से पुकारूंगा।

मैं : जी नहीं माफ कीजिए, जो मैं हूं वही हूं।
मैं : महान् नहीं बनना चाहते ?
मैं : यार इस तरह बद्दुआ और गाली क्यों देते हो ?
मैं : अच्छा, चलो हाथ मिलायें।
मैं : चौके में। देखो चौका कितना गंदा है। श्रीमती आरती लाल की तबीयत अगर खराब न होती तो यह चौका इतना गंदा होता।
मैं : चलो साफ करें।
मैं : पहले बर्तन, फिर चौका, फिर चाय···।
मैं : फिर ?
मैं : इस क्षण तो केवल यही है। इसके अलावा और कुछ भी नहीं। न मैं न तुम···।

सबरंग मोहभंग

मंचन

['सबरंग मोहभंग' का पहला प्रदर्शन नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली द्वारा दो दिसम्बर, उन्नीस सौ छिहत्तर को, स्टूडियो थियेटर, रवीन्द्र भवन में हुआ।]

पात्र

पुरुष : **अजय गड़ोदिया**
युवती : **कुमारी राजकिरन कौल**
पहला युवक : **अशोक निशेष**
दूसरा युवक : **अमिताभ श्रीवास्तव**
तीसरा युवक : **पंकज सक्सेना**
चौथा युवक : **गोविन्दप्रसाद नामदेव**
पांचवां युवक : **अविनाश श्रीवास्तव**
दर्शक : **सुनील जैन**

मध्यान्तर के बाद

पहला युवक : **हेमन्त मिश्र**
दूसरा युवक : **ज्योति स्वरूप**
तीसरा युवक : **पंकज सक्सेना**
युवती : **राजकिरन कौल**
आगन्तुक : **अजय गड़ोदिया**

श्रेय

मंच-विधान : **जमील अहमद, दिलीपचन्द**
प्रकाश : **विजय कविश, रवि शर्मा, अशोक भार्गव और जमील अहमद**
संगीत-चुनाव : **पंकज जमील**
संचालन : **कुमारी त्रिपुरा शर्मा**
परिधान : **कुमारी राजकिरन कौल और कुमारी नूतन मिश्रा**
मंच-व्यवस्था : **पंकज सक्सेना**
निर्देशन : **ज्योति स्वरूप, जमील अहमद**

पहला दृश्य

[मंच पर प्रकाश आते ही पुरुष और युवती एक-दूसरे का पीछा करते दौड़ते दिखते हैं। अचानक युवती रुक-कर बोलने लगती है। पुरुष दौड़ने का अभिनय कर रहा है।]

पुरुष : जरा जोर से ! और जोर से ! ओहो, चिल्लाकर नहीं। अभिनय···अभिनय···।

युवती : हे महाकाल ! **(सहसा रुककर)** ठीक है ?

पुरुष : चलेगा। सामने देखो, सामने। घबड़ाते नहीं।

युवती : हे महाकाल ! कैसी है यह दौड़ !
हे महाशून्य ! कैसा है यह मौन !

पुरुष : शरीर में भाव लाकर···।

युवती : फिर से करूं ?

[पुरुष रुकता है।]

पुरुष : यह रिहर्सल नहीं, प्रदर्शन है।

युवती : हे महाकाल ! कैसी है यह दौड़ ! **(सहसा)** दौड़ते क्यों नहीं ? दौड़ो !

[पुरुष दौड़ने का अभिनय करता है।]

युवती : यह धुरी क्या है जिस पर सब रहा घूम
कौन है घूम रहा
कौन है घुमाने वाला
उत्तर मौन क्यों है
मैं कब तक पुकारूं तुम्हें अकेली कंठ से
हे महाकाल, क्षितिज पर भोर फूटेगा कब
कब टूटेगा तुम्हारा मौन ?

[दर्शकों में अशांति फैलने लगती है। उन्हीं में बैठे हुए युवक बोलना शुरू करते हैं।]

पहला : भाई, यह कवि-सम्मेलन है या नाटक ? कहीं गलत जगह तो हम नहीं आ गए ?

दूसरा : पहले थोड़ा और देख तो लो।

तीसरा : इसमें देखना क्या है ?

चौथा : अरे भाई, थोड़ा सब्र तो रखो। उधर देखो।

पहला : हम नाटक देखने आए हैं, यह बकवास सुनने नहीं। न कोई सिर, न पूंछ। एक बेमतलब दौड़ लगा रहा है, और यह बहनजी दिमाग चाट रही हैं···महाकाल··· महाशून्य···जिसका कोई मतलब नहीं। फजूल की लफ्फाजी।

तीसरा : हम दर्शकों का जैसे कोई मतलब ही नहीं है। जिस पर ये नाटक वाले कहते हैं—दर्शक नहीं हैं। और ये लोग दर्शकों की यह हालत बनाते हैं—'बोर' करते हैं खामखा।

[इस बीच मंच पर वही दृश्य चल रहा है। अब पुरुष रुककर बोलना चाहता है।]

पहला : देखिए जनाब, कुछ बोलने से पहले हम दर्शकों की सुन लीजिए—इस तरह आप हमें 'बोर' नहीं कर सकते।

तीसरा : कुछ हमारे मतलब की चीज़ दिखाइए, वरना आप सिर पीटिए। हम चले।

पहला : हमारे टिकट के पैसे वापस कीजिए।

दूसरा : अरे भाई, इस बेचारे का 'डायलॉग' तो सुन लो। हो सकता है, कोई दिलचस्प बात पैदा हो जाए।

तीसरा : ठीक है। तू भी सुना।

पुरुष : जो रुका है आपके सामने, दरअसल वह भी दौड़ रहा है।

पहला : अब सम्हालो।

पुरुष : रुकने और दौड़ते रहने में सिर्फ उतना ही फर्क है, जो रोने और हंसने में है।

तीसरा : तेरा सिर है!

पुरुष : क्या आपने कभी अपनी मुस्कराहट नापी है
कोई है जो हमारी खामोशी नाप रहा है
आओ हम भी नाप लें उसकी मुस्कान
नहीं तो वह यह कहकर चुप हो जाएगा
सारी मुस्कान केवल डेढ़ इंच की है।

पहला : यार, यह एक्टर है कि दर्ज़ी?

तीसरा : भाई साहब, माफ कीजिए, बहुत हुआ।

चौथा : बहनजी, रुक जाइए। थक गई होंगी।

[युवती रुक जाती है।]

पुरुष : आप लोग क्या चाहते हैं?

पहला : ज़ाहिर है, नाटक देखना चाहते हैं।

पुरुष : कैसा नाटक?

पहला : जो हमारी समझ का हो। हम आपका हवाई, दिमागी खेल नहीं बर्दाश्त कर सकते।

चौथा : बहुत हुई बकवास तुम्हारी।

पहला : हम मनोरंजन के लिए आए हैं।

पुरुष : कैसा मनोरंजन? हम कोई फिल्मी गाना सुनाएं? हंसी-मज़ाक पेश करें?

दूसरा : पहली बात, हम दर्शकों का भी खयाल कीजिए।

तीसरा : हम जिस मकसद से यहां आए हैं, उसे मत भूलिए।

चौथा : वरना हम आपको यहां खड़ा नहीं रहने देंगे।

पुरुष : ठीक है। हम आपकी बात मानते हैं। तो आप लोग यहां आ जाइए। नहीं, नहीं, सब लोग नहीं। वहां से शोर मचाना आसान है। यहां आते ही सिट्टी-पिट्टी गुम जाती है। आप आइए···आप···आप···भी आ जाइए···और आप भी। बाकी लोग बैठ जाइए अपनी-अपनी जगह। लाइट ऑफ। **(अंधेरा)** लाइट दो। पूरी लाइट।

[प्रकाश]

दूसरा दृश्य

[मंच पर वही पुरुष खड़ा है। चारों युवक और वही युवती।]

पुरुष : तो हम आपका नाटक शुरू करें?

चारों : बिलकुल।

पुरुष : आपके नाटक का नाम क्या होगा?

पहला : सबरंग।

दूसरा : नहीं, मोहभंग।

पुरुष : चलिए—सबरंग मोहभंग।

[संगीत]

पुरुष : हाज़रीन लेडीज़ एण्ड जेंटिलमेन, देवियो, महाशय,

सज्जनो ! बेटिकट घुसपैठिये, बेबुलाए मेहमानो, मंच के इधर-उधर बेमतलब खड़े खुसुर-फुसुर करते हुए लोगों से, बड़ा बच्चा लोग बातें बन्द। देवियो, इधर ध्यान दीजिए, ज़िन्दगी का प्याला कभी भरता नहीं, नाटक का जाम पीजिए। खेल बुरा लगे तो खुलकर हमें बद्दुआ दीजिए। अच्छा लगे, राम-राम कीजिए। आइए, अब थोड़ा-सा इधर ध्यान दीजिए। देखिए और सोचिए। सोचने से अगर एलर्जी है तो सोचने की 'स्विच' ऑफ कर दीजिए और जिसकी बिजली ही कट गई है, चाहे तो अन्दर एक लालटेन जला लीजिए और जिसे देखना नहीं आता, मतलब आंखें भरपूर हैं, मगर खुदगर्ज़ी से इस कदर चकनाचूर हैं कि अपने अलावा और कहीं कुछ दीखता ही नहीं तो उसे मेरी करजोर विनती है, अजी आपके सामने मेरी क्या गिनती है—विनती यह है कि थोड़ा-सा ध्यान दीजिए, हंसी आए तो रोक लीजिए। न आए तो रूमाल से मुंह पोंछ लीजिए। जो आप चाहेंगे, हम वही दिखाएंगे। गरज़, हममें-आपमें कोई फर्क नहीं। आप जो चाहेंगे, वही होंगे आप। आप जो होंगे, वही होंगे हम।

[दर्शक शोर मचाते हैं—'खेल करो शुरू। क्या लगे यह भाषणबाज़ी करने !']

पुरुष : कमाल है ! पहले पूछना होगा, आखिर देखने वाले देखना चाहते हैं ?

युवती : ये जब यहां देखने आए हैं हमें, तो यह साफ है कि ये अपने-आपको नहीं देखना चाहते।

पुरुष : पर सवाल है कि ये देखना क्या चाहते हैं ?

युवती : मतलब, आपके पास अपना कुछ दिखाने को नहीं है ?

पुरुष : क्यों नहीं ! तुम हो एक हसीना, जिसे देखकर आए पसीना। अरे बन भी जाओ, राम, श्याम, गुलाम और सतकाम।

युवती : मेरा नाम भी तो बताइए।

पुरुष : बताना मना है।

युवती : तो हटिए किनारे, कीजिए इशारे।

पुरुष : तो इनसे न पूछूं !

युवती : पूछिए, मगर भाषण मत दीजिए।

पुरुष : मगर पूछने के पहले हालचाल तो पूछना ही पड़ता है। पड़ता है। हां, तो हाज़रीन ! जो हम हैं, वहीं हैं आप। जो हम हैं, वही है हमारा बाप। तो हम वक्त और बरबाद न करें, खेल शुरू कर दें। आप आए हैं तो लौटकर जाना भी है। जाएंगे तो खाना भी है। हां, तो हाज़रीन, हम खेल दिखाएंगे नमकीन। जो कहेंगे, वही 'क्विएट' कर देंगे सीन। बोलिए, क्या चाहिए, बताइए हाज़रीन—कॉमिडी या ट्रेजिडी, ड्रामा या मेलोड्रामा, रेलिजस या माइथोलॉजिकल, सोशल या···

[दर्शकों में से एक आवाज़ आती है।]

आवाज़ : रोमांस।

दूसरी : नहीं, रोमांटिम कॉमेडी।

तीसरी : नहीं, खालिस रोमांस। हम अपनी ज़िन्दगी से 'बोर' हो चुके हैं। कहीं कुछ खालिस नहीं।

पुरुष : लड़िए नहीं, झगड़िए नहीं। हम समझ गए, आपको चाहिए रोमांस। तो रोमांस चलती सड़क का, क्लास-रूम या चौके-चूल्हे का ? डोमेस्टिक रोमांस या किसी दफ्तर का, क्लर्क या किसी अफसर का···?

[एक आदमी खड़ा होकर ज़ोर से कहता है—'अजी, पन्द्रह-बीस मिनट में सब चाहिए।']

पुरुष : तो लीजिए, हमारे खेल का जाम पीजिए। हम शुरू करते हैं सड़क के रोमांस से···। आप ही लोगों के साथ से। आप, आप, आप, आप और आप यहां आ

जाइए।

[पुरुष तेज चलता है। दृश्य में चलती हुई युवती बैग खोलकर उसके शीशे में अपने-आपको देखती हुई होंठों पर लिपस्टिक लगा रही है। चारों युवक उसका पीछा कर रहे हैं। पुरुष चौराहे का ट्रैफिक पुलिस बनकर सीटी बजाता हुआ हाथ दिखाता हैं। पूरा ट्रैफिक रुक जाता है।]

राम : उधर कोई ट्रैफिक नहीं तो इधर क्यों रोक दिया ?

श्याम : देखते नहीं, हमें देर हो रही है !

गुलाम : इत्ती तेज़ धूप में खड़ा कर दिया !

सतकाम : बहनजी, आप क्यों नहीं कुछ कहतीं ?

युवती : आप लोग क्यों नहीं कहते ?

राम : आप नजदीक हैं।

श्याम : आपकी बात का असर पड़ेगा।

सतकाम : हमारी कौन सुनता है !

श्याम : यार, चुप भी रहो।

राम : चुप तो हैं ही।

युवती : इसके अलावा और है ही क्या ?

राम : देखिए, ऐसा मत कहिए।

श्याम : बहनजी, आप भी किसके मुंह लग रही हैं ?

सतकाम : हाय, कित्ती उमस है !

श्याम : ओ रे भाई, इधर तो घूम।

राम : जल्दी भी क्या है !

श्याम : तुम्हें न हो, मुझे है।

राम : तो चीखते क्यों हो ?

श्याम : ताकि उसे सुनाई पड़े।

युवती : अरे, मेरी घड़ी ही रुक गई।

सतकाम : हम सब रुके हैं।

युवती : आप सब घड़ी हैं ? कोई दूसरा चाभी दे तो चलेंगे ?

राम : हम घड़ी नहीं हैं।

युवती : तो चलते क्यों नहीं ?

राम : आप मेरे साथ चलेंगी ?

युवती : चलने के लिए कोई शर्त नहीं होती। जिसको जाना है, वह चल पड़ता है; पर आप लोगों ने तो शर्तों की ज़िन्दगी काटी है।

गुलाम : क्या आपने नहीं काटी ?

युवती : बस, अब यही रह गया, हम आपस में लड़ें।

[पुलिस वाले ने अपनी पॉकेट से एक शीशा निकालकर युवती के सामने कर दिया है। युवती उसमें अपना मेकअप ठीक करती है।]

राम : महाशयजी, हमें जाने दीजिए।

युवती : सवाल है, जाइएगा कहां ?

राम : जहां मुझे जाना है।···कमाल है, हमें जाने क्यों नहीं देते ?

[पुलिस वाले ने शीशा पॉकेट में रख लिया है और इधर पीठ फेर ली है।]

श्याम : जिधर कोई ट्रैफिक नहीं, उधर पास दिए जा रहे हैं। हमें खामखा रोक रखा है।

गुलाम : सुना है, उधर से कोई महाशयजी अभी गुज़रने वाले हैं, तभी इधर की सारी ट्रैफिक रोक दी गई है।

सतकाम : कौन हैं ? क्या हैं ? कौन-सी हस्ती हैं ? कभी नाम सुना नहीं। भाई, नाम तो बताओ। यह महाशयजी कोई नाम है या उपनाम ? हअं, महाशयजी !

युवती : मैंने सुना है।

श्याम : क्या सुना है ?

युवती : देखा भी है।

राम : क्या देखा है ?

युवती : उनके बारे में क्या कहने ! वह वाह-वाह ! जब चलते

हैं तो घुंघरू बजते हैं; जब बोलते हैं तो फूल झरते हैं; जब हाथ उठाकर ललकारते हैं, तो हाय-हाय-हाय ! फिल्म के हीरो हैं, असली ।

श्याम : वह हैं कौन ?

[सब युवती को घेरकर उत्तेजित होकर पूछने लगते हैं। इस बीच पुलिस वाले ने सीटी बजाकर जाने के लिए पास दिया था, पर ये लोग बुरी तरह अपनी बातों में फंसे थे।]

राम : चलो, चलो, पास दे दिया है।

[सब बढ़ते हैं, पर पुलिस वाला फिर पीठ मोड़ लेता है।]

गुलाम : हम रातों में फंसे रहे, हमारा चांस निकल गया।

श्याम : हे जी, आप कहां रहती हैं ?

सतकाम : आप कहां जा रही हैं ?

गुलाम : यह मेरा कार्ड है, क्या आपसे मेरी 'फ्रेंडशिप' हो सकती है ? यों तो मेरे पास अपना कुछ नहीं है, पर आपके लिए मैं कोई भी त्याग कर सकता हूं।

युवती : फिर मुझे त्याग दीजिए।

श्याम : त्याग ही जीवन है। जिसमें त्याग नहीं, वह अधम है। मैं इतना पढ़-लिखकर त्याग का जीवन व्यतीत कर रहा हूं। कहीं कोई सिफारिश नहीं, नौकरी नहीं, सो त्याग का जीवन व्यतीत कर रहा हूं।

राम : जब कुछ है नहीं तो त्याग कैसा ? मेरे पास है—उत्साह, पर बिना किसी सपोर्ट के उत्साह ठंडा पड़ा है। आपके पिताजी क्या हैं ?

युवती : अब यही सवाल रह गया है ?

राम : पर आप हैं कौन ?

श्याम : बहनजी, बता ही दीजिए।

युवती : मैं उनकी प्राइवेट सेक्रेटरी हूं।

राम : अरे ! फिर इसे अपना कार्ड दिखाइए।

श्याम : इसकी क्या मजाल कि हमें इस तरह रोके रखे ! वाह···

गुलाम : जी महाशयजी, यह उनकी प्राइवेट सेक्रेटरी हैं। यह देखिए कार्ड। आदाब अर्ज़ !

[पुलिस वाला कार्ड देखता है। सूंघता है। गश खाकर गिरने लगता है। सब उसे सम्हालते हैं।]

राम : पास दीजिए, हम निकल जाएं।

श्याम : हम बहुत तेज़ दौड़कर निकल जाएंगे।

गुलाम : महाशयजी की गाड़ी आ रही है।

पुलिस वाला : सावधान !

[सीटी बजाता है।]

राम : महाशयजी की सवारी के पीछे-पीछे निकल सकते हैं।

[पुलिस वाला सैल्यूट मारता है। अदृश्य महाशयजी के पीछे-पीछे पुलिस मैन चलता है। उसके पीछे-पीछे सब चलते जाते हैं।]

तीसरा दृश्य

पुरुष : हाज़रीन, तालियां बजाना बन्द कीजिए। अब पेशे-खिदमत है, चौके-चूल्हे का रोमांस। यह है मेरी धर्म-पत्नी गुलाबो। समझ लीजिए, ये मेरे चार लड़के हैं। नाम वही चलेगा। अजी, अब नाम में क्या रखा है ? तो जनाब, यह पहले की मेरी गलती है। चार लड़के, मतलब इतनी औलाद···बाप रे ! सो गलती हो गई तो भुगत रहा हूं। ऐसी गलती आप न करें। पर यह भी सच है, कबूल करता हूं, जो गलती करता है, वही कहता है दूसरों से—गलती न करें। पर यह एक ऐसी

गलती है, जिसे मैं अपराध कहूंगा। इसका सम्बन्ध सीधे पेट से है, और पेट ही सारी मुसीबतों की जड़ है। हां, हां, मुझे पता है, तुम लोग बहुत भूखे हो, पर अपनी मां की मुसीबत भी तो देखो। क्या कहा, मैं देखूं ? मैं तो देख ही रहा हूं, अब आप लोग देखिए···।

[इस बीच गुलाबो (युवती) चूल्हा फूंकने लगती है। धुएं से उसकी नाक में दम है। पांचों लड़के चौके में रोटी खाने बैठे हैं।]

राम : अम्मां, रोटी दे।

श्याम : मम्मी, खाना दे।

गुलाम : माताजी, बड़ी भूख लगी है।

सतकाम : कित्ती देर हो गई बैठे-बैठे !

राम : कलेजा मुंह को आ रहा है।

गुलाबो : तो खा लो न कलेजा ! दाढ़ीजार के पूत ! जब देखो तब खाऊं-खाऊं। चूल्हा नहीं जलता तो कहां से लाऊं ? खुद को पकाऊं या तेरे दाढ़ीजार बाप को पकाऊं ? चाऊं-माऊं, खाऊं-माऊं।

[पांचों थाली बजाकर गाना शुरू करते हैं।]

अम्मां रोटी दे
अम्मी रोटी दे
पेट मा लागी आग आंख से पानी बरसे
चहुंदिस है बरसात पिया बिन नैना तरसे
अम्मां रोटी दे
अम्मी रोटी दे।

पुरुष : चौप्प ! साइलेंस प्लीज ! मेरे प्यारे भूखे-प्यासे जिगर के टुकड़ो, कीप क्वाइट। अरी गुलाबो ! ओ री मेरी प्यारी गुलाबो ! हे री सब्जपरी मेरी, तू कहां है ? **(बैठ जाता है।)** तेरे बिना मैं जला जा रिया हूं। इतना धुआं उठ रिया है इस घर में कि घुटकर मरा

जा रिया हूं।

[गुलाबो एक बाल्टी में पानी लाकर पति के ऊपर डालती है। शेष पानी चूल्हे में डालती है। पांचों लड़के वही गीत गाते हैं। पिता अपने गीले कपड़े झाड़ रहा है। गुलाबो उसे पंखा कर रही है।]

पुरुष : अबे चौप्प, भैंस की औलाद !···गुलाबो ! हो री गुलाबो !

गुलाबो : **(गुस्से से)** मेरे बच्चों को भैंस की औलाद कहा ? मैं भैंस हूं ?

पुरुष : अरे प्यार से कहा।

गुलाबो : प्यार नहीं, कपार। भैंस होंगे तुम !

[लड़के हंस रहे हैं।]

पुरुष : हे, चलो यहां से ! चलो ! भागो यहां से ! अच्छा भागवान, ये भैंस की औलाद नहीं, देवी-देवता की औलाद।

[सब चुप देखते रह जाते हैं।]

गुलाबो : तुम मुझसे परेम करते हो न ?

पुरुष : अरे यह भी कोई कहने की बात है ?

गुलाबो : तुम्हारे हाथ में तो परेम करने की रेखा ही नहीं है।

पुरुष : अरे काम करते-करते घिस गई रेखा। हिरदय में है।

गुलाबो : अच्छा, अगर मुझसे परेम करते हो तो मेरे कहने से इस कुंए में कूद जाओ।

पुरुष : लो, इसमें क्या है, अभी कूद जाता हूं; पर बचा ज़रूर लेना डूबने से। चलो, अपने हाथ से धक्का दे दो।

गुलाबो : नहीं, मैं पतिव्रता नारी हूं।

पुरुष : तो मैं कूद रिया हूं। एक, दो, तीन···

[कूदता है।]

सब लड़के : वाह पिताजी, क्या छलांग मारी है !

[पिताजी 'बचाओ, बचाओ' चिल्ला रहे हैं।]

गुलाबो : रुको, चिल्लाओ नहीं। पहले अपनी भाग्य-रेखा देख लूं कि तुम बचोगे या नहीं।

[एक दर्शक उठकर]

दर्शक : बस-बस, अब रोमांस नहीं, ट्रेजिडी।

पुरुष : सीरियस या वेरी सीरियस ?

दर्शक : वेरी सीरियस।

चौथा दृश्य

पुरुष : ट्रेजिडी नाटक में नहीं, ज़िन्दगी में होती है। ज़िंदगी की समझ में। नाटक सीरियस नहीं होता, 'सीरियस' होता है दर्शक। तो हाज़रीन, गम्भीरता है देखने में।

एक पुरानी कहानी सुनाता हूं—जातक कथा—एक था राजा। उसे मांस खाने का बहुत शौक था। तरह-तरह के जीव-जन्तुओं के मांस खाता। जिस दिन मांस लज़ीज़ नहीं होता, मंत्री को पांच कोड़े लगते।

[दृश्य में राजा, मंत्री, रसोइया और नौकर।]

राजा : सारा भोजन नीरस।

मंत्री : क्यों रसोइया, भोजन नीरस क्यों ?

रसोइया : जैसे रोज़ बनाता था—वही मसाले, वही घी, तेल···· मांस अच्छा नहीं रहा होगा।

राजा : क्यों मंत्री ?

मंत्री : दुहाई महाराज की ! मांस हिरन का था।

राजा : ओह, हिरन का मांस खाते-खाते ऊब गया।

मंत्री : भेड़ और बकरे का भी था।

राजा : रोज़-रोज़ वही भेड़-बकरा ! मंत्री को पांच कोड़े मारे जाएं।

[मंत्री को पांच कोड़े लगते हैं।]

राजा : जाओ, कोई ऐसा मांस लाओ, जिसे मैंने अब तक न खाया हो। इतना लाजवाब, जायकेदार हो कि मैं खुश हो जाऊं।

मंत्री : कोशिश करूंगा महाराज !

[मंत्री खोज में निकलता है।]

पुरुष : घूमते-घूमते, तलाशते-तलाशते मंत्री एक नदी के किनारे पहुंचा। वहां एक चिता जल रही थी। मंत्री ने सोचा, क्यों न मैं इंसान का यह भुना हुआ मांस राजा को खाने को दूं। ऐसी नायाब चीज़ तो राजा ने कभी न खाई होगी। सो जलती चिता से मांस का एक टुकड़ा लेकर चला मंत्री राजा के पास।

[मंत्री इसी कार्य का अभिनय करता है।]

राजा : वाह-वाह ? क्या लज़ीज़ चीज़ है ! थोड़ा और ले आओ। थोड़ा और।

[रसोइया, मंत्री, नौकर ला-लाकर देते हैं।]

राजा : थोड़ा और।

मंत्री : महाराज, अब और कल।

राजा : अब यही मांस रोज़ बनेगा मेरे खाने के लिए। इसके अलावा और कोई चीज़ नहीं। वाह !

मंत्री : जो आज्ञा महाराज !

पुरुष : मंत्री रोज़ एक आदमी को मरवाता और राजा बड़े मज़े से वही खाता।

[राजा खा रहा है।]

राजा : वाह-वाह क्या चीज़ है ! अब इसके अलावा और कुछ भी नहीं खा सकता। इससे मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा होता चला जा रहा है। मेरी बुद्धि भी बढ़ती चली जा रही है। राज्य में कितनी शांति है ! प्रजा सुखी है। सब इसी स्वादिष्ट भोजन का प्रताप है। वाह-वाह !

पुरुष : राज्य में प्रजा दिनोंदिन कम होती चली गई। सारी प्रजा भयभीत हो गई। लोग राज्य से भागने लगे। चारों तरफ हाहाकार मच गया। एक दिन एक स्त्री रोती हुई राजदरबार में आई।

[राजा के दरबार में स्त्री आती है।]

स्त्री : कहां है मेरे देश का राजा ?

राजा : मैं हूं। बोलो, तुम्हें क्या कहना है ?

स्त्री : तुम्हारा यह मंत्री हत्यारा है। मेरे बेटे को मारकर···

मंत्री : ऐ पागल स्त्री, ज़बान संभालकर बातें कर ! जानती नहीं, तू क्या कह रही है ?

स्त्री : क्या राजा जानता है, वह किसका मांस खा रहा है ?

मंत्री : चुप रह ! चली जा यहां से !

स्त्री : तूने मेरे एकलौते पुत्र को मारा।

राजा : मंत्री, यह क्या कह रही है ?

स्त्री : राजा, तू मनुष्य का मांस खा रहा है। यह प्रतिदिन किसी प्रजा की हत्या कर वही तुझे खाने को देता है। प्रजा में हाहाकार मचा है तेरी भूख का।

राजा : क्यों मंत्री, यह सच है ?

मंत्री : सच है महराज !

राजा : यह जघन्य अपराध तूने क्यों किया ?

मंत्री : यही आपकी इच्छा थी।

राजा : क्या कहा ?

मंत्री : यही आपकी आज्ञा थी।

राजा : बन्दी कर लो इसे !

[सब मंत्री को बन्दी बनाते हैं।]

मंत्री : इसमें मेरा क्या अपराध ! जो आपको प्रिय था, मैंने वही किया। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया।

बचाओ, बचाओ ! इसमें मेरा कोई अपराध नहीं। जो आपने चाहा, मैंने वही किया। आपने कभी पूछा

नहीं, सो मैंने बताया नहीं।

राजा : क्यों नहीं बताया ? यही है तेरा अपराध।

मंत्री : मैं कैसे कब बताता ?

राजा : हत्यारा कहीं का ! ले जाओ इसे, बन्दीगृह में डाल दो।

[मंत्री को ले जाते हैं। राजा अशांत होता है।]

राजा : मुझे भूख लगी है। खाना लाओ। वही खाना। वही स्वादिष्ट पकवान। क्या देख रहे हो मेरा मुंह ?

[रसोइया आता है।]

राजा : मुझे भूख लगी है। कहां है मेरा भोजन ?

रसोइया : वह नहीं है।

राजा : बुलाओ रानी को।···रानी !

[रानी आती है।]

राजा : देखती नहीं, मुझे इतनी भूख लगी है !

रानी : तरह-तरह के व्यंजन तैयार हैं। चलिए, भोजन कीजिए।

राजा : तुम्हें पता नहीं, मैं केवल वही भोजन कर सकता हूं। बुलाओ मंत्री को।

रानी : मंत्री कारागार में है।

राजा : मुक्त करो।

[मंत्री आता है। सारे राजदरबार के लोग चिन्तित खड़े हैं।]

एक : मंत्री, रक्षा करो हमारी !

दूसरा : नहीं तो एक-एक कर राजा हमें खा जाएगा।

तीसरा : उसे छोड़ राजा और कुछ नहीं खाना चाहता।

रानी : बिना और कुछ खाए-पिए राजा मर जाएगा।

चौथा : राजा की आज्ञा है, कोई प्रजा न मिले तो राजदरबार से एक-एक कर लोगों की बलि की जाए।···बचाओ बचाओ···

[मंत्री राजा के पास आता है।]

मंत्री : राजा! सुनो राजा! एक थी नदी। बहुत बड़ी, बहुत गहरी।

राजा : कहानी सुनने का समय कहां है? इतनी भूख लगी है।

मंत्री : बहुत छोटी-सी कथा है महाराज!

राजा : जल्दी करो!

[शेष लोग इस कहानी का अभिनटन करते हैं।]

मंत्री : नदी में एक बड़ी मछली रहती थी। बड़ी मछली का एक ही काम था—नित्य एक छोटी मछली को खा जाती। इसका असर और मछलियों पर। हर बड़ी मछली अपने से छोटी मछली को खाने लगी। धीरे-धीरे नीचे से छोटी-छोटी मछलियां समाप्त होने लगीं। फिर बड़ी मछलियों को उनसे बड़ी मछलियां खाने लगीं। और उस नदी में जो सबसे बड़ी मछली थी—सबसे बड़ी, उसने नदी की सारी मछलियों को खा डाला। नदी में अब एक भी मछली नहीं। केवल वही बड़ी मछली। और अब वह बड़ी मछली इतनी बड़ी, मोटी, विशालकाय हो गई कि नदी में उसका चलना-फिरना कठिन हो गया। नदी के बीच में एक जगह एक छोटा-सा पहाड़ था। एक बार वह मछली, जब उसे भूख बहुत लगी, तो उसने शिकार की तलाश में अपने पूरे बदन से उस पहाड़ को चारों तरफ से कुंडली मारकर बांध लिया। उसके मुंह के ऊपर उसकी पूंछ। उसने सोचा, मेरे मुंह के पास कोई छोटी मछली आई है। उसने मुंह में डाल ली अपनी पूंछ और खुद खाने लगी —अपने आपको···।

[राजा की कमर पकड़े सब वही विशालकाय मछली बने हुए हैं। सब गोलाई में हैं। राजा के मुंह के पास रानी है।]

एक दर्शक : भाई, यह तो बहुत 'सीरियस' हो गया। हमें, ऐसी 'ट्रेजिडी' नहीं चाहिए। हमें 'कॉमेडी' चाहिए।

दूसरा दर्शक : धत्त्! कॉमेडी नहीं, सुखांतकी। ज़रा भी राष्ट्रभाषा से प्रेम नहीं?

तीसरा दर्शक : अजी, कोई माइथोलॉजिकल चीज़ दिखाइए; पर सावधान, कोई सम-सामयिक, मलतब 'कंटेमपोरेरी' अर्थ डालकर सारा गुड़ गोबर मत कर दीजिएगा।

पांचवां दृश्य

पुरुष : समझ गया, समझ गया। हाज़रीन, मेहरबान, समझ गया। पांडवों ने जुआ खेला। इस दृश्य में कुछ और लोगों की ज़रूरत है। आ जाइए। आप भी।

[चरित्र आ जाते हैं।]

राम : पांडव जुए में हार गए।

पुरुष : चौदह वर्ष का बनवास हुआ।

श्याम : बारह वर्ष का बनवास, दो वर्ष का अज्ञातवास।

गुलाम : बनवास पूरा किया।

पुरुष : बनवास काटकर लौटे राजधानी। युधिष्ठिर बोले दुर्योधन से—भाईजान, अब दो हमारा आधा राज। हमने अपना वचन किया पूरा, भाई, तुम भी अपना वचन करो पूरा।

दुर्योधन : कैसा वचन?

युधिष्ठिर : अरे, आप भूल गए! आधा राज्य देने का।

दुर्योधन : यह आधा राज्य और पूरा राज्य क्या होता है? राज्य के बारे में तुम बिलकुल अनाड़ी हो।

युधिष्ठिर : हमें हमारा राज्य दीजिए।

दुर्योधन : राज्य? कैसा राज्य?

युधिष्ठिर : हमारा अधिकार।

दुर्योधन : ओह ! अब समझा। राज्य मांगने आए हो ?

युधिष्ठिर : जी हां, बिल्कुल।

दुर्योधन : राज्य चलाने का अनुभव है ?

युधिष्ठिर : हो जाएगा।

दुर्योधन : ओह, भविष्य की बातें मत करो। राज्य चलाने का अनुभव नहीं है, इसलिए राज्य नहीं मिलेगा।

युधिष्ठिर : पर हम उसके अधिकारी हैं।

दुर्योधन : यहां अधिकार का प्रश्न नहीं, अनुभव का प्रश्न है। जाओ, समय मत बर्बाद करो। हअं, राज्य दे दो इन्हें ! जैसे कोई खेल है। लड्डू है—इन्हें दे दो। जाओ, तुम जैसे अनाड़ी के हाथ में राज्य देकर प्रजा को मैं तबाह नहीं कर सकता। अधिकार के नाम पर अशांति फैलाना चाहते हो ! जाओ, खड़े क्या हो !

युधिष्ठिर : तो नहीं दोगे हमारा अधिकार ?

दुर्योधन : मांगने से मिलती है भीख। यह तू मुझसे सीख।

युधिष्ठिर : अहंकारी !

दुर्योधन : भिखारी !

[युधिष्ठिर दौड़े हुए कृष्ण के पास जाते हैं। कृष्ण बांसुरी बजा रहे हैं। युधिष्ठिर 'कॉलबेल' दबाते है।]

कृष्ण : कौन है ?

युधिष्ठिर : युधिष्ठिर।

कृष्ण : 'कम इन'।

[युधिष्ठिर पास आते हैं।]

कृष्ण : चाय या कॉफी ?

युधिष्ठिर : मैं बहुत परेशान हूं महाराज !

कृष्ण : फिर तो कोकाकोला चलेगा।

युधिष्ठिर : मेरी बात तो सुनिए। दुर्योधन ने कहा—मैं पांडवों को राज्य नहीं देता।

कृष्ण : ऐसा ?

युधिष्ठिर : ऐसा, महाराज, ऐसा !

कृष्ण : पर वह कहता क्या है ?

युधिष्ठिर : कहता है—मेरा राज्य है, मैं किसी को नहीं देता। बनवास काटकर आए, अपना धर्म पूरा किया। जो जिसका काम है, वह करेगा, कर रहा है। राज्य करने का अनुभव नहीं है, सो राज्य नहीं मिलेगा।

कृष्ण : ऐसा कहा ?

युधिष्ठिर : हां, महाराज !

कृष्ण : घबराओ नहीं, मैं जाता हूं उसके पास।

युधिष्ठिर : मैं भी चलूं ?

कृष्ण : नहीं। मुझे अकेले जाना होगा।

[कृष्ण दुर्योधन के पास पहुंचते हैं।]

कृष्ण : **(उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिए खंखारते हैं।)** अरे भाई, मैं आया हूं। देखो, आया हूं—कृष्ण। अरे, मैं इधर हूं।

[दुर्योधन युवती से।]

दुर्योधन : पूछो, 'अप्वॉइंटमेंट' लिया था ? हअं, चले आते हैं बड़बड़ाते हुए ! वही पुराना जमाना सोच रखा है !

युवती : महाराज से आपका 'अप्वॉइंटमेंट' था ?

कृष्ण : बोलो, कृष्ण आए हैं।

युवती : (आकर) कृष्ण आए हैं महाराज !

दुर्योधन : कोई कुछ भी हो, बिना 'अप्वॉइंटमेंट' के नहीं मिल सकता। खैर, मिल लेता हूं; पर बोल देना, आइन्दा ऐसा न हो। सुनो, ज़रा देख-सुन लेना। सावधान !

[युवती कृष्ण को एक सिपाही के पास ले जाती है।]

सिपाही : यह क्या चीज़ है ?

कृष्ण : बांसुरी।

सिपाही : यह क्या चीज़ होती है ?

कृष्ण : बजाई जाती है···संगीत होता है।

सिपाही : कैसा संगीत ? यह क्या चीज़ है ?

कृष्ण : बजाकर दिखा दूं ?

सिपाही : नहीं-नहीं, इसे यहां छोड़कर जाओ !

कृष्ण : इसे नहीं छोड़ सकता।

सिपाही : कोई खतरनाक चीज़ तो नहीं ?

कृष्ण : अरे, यह बांसुरी है भाई !

सिपाही : फिर भी कोई खतरनाक चीज़ तो नहीं ? **(देखता है)** क्या इसे साथ ले जाना ज़रूरी है ?

[युवती सिपाही के कान में कुछ कहती है। सिपाही घबराकर उनके पैरों पर गिरता है।]

सिपाही : छमा हो मुरलीमनोहर ! छमा हो !

[कृष्ण मुस्कराते हैं। दुर्योधन के पास जाते हैं।]

युवती : महाराज, कृष्ण पधारे हैं।

दुर्योधन : कहिए, क्या बात है ?

कृष्ण : अरे भाई, कुछ नमस्कार-प्रणाम तो करो !

दुर्योधन : इतना समय नहीं है।

कृष्ण : क्या ?

दुर्योधन : देखिए, समय नष्ट मत कीजिए। देखते क्या हैं ? अपनी बात लिखकर लाए हैं ? ओ हो !···संक्षेप में कहिए—क्या है ? बेहतर होगा, प्रार्थना-पत्र लिखकर मेरी सेक्रेटरी को दे दीजिए।

कृष्ण : मुझे कुछ आप ही से कहना है।

दुर्योधन : कहिए, जल्दी कीजिए। देखिए, मेरे पास इतना वक्त नहीं है। उधर मत देखिए—वह मेरी प्राइवेट सेक्रेटरी है। वह यहीं रहेगी।

कृष्ण : आपका स्वास्थ्य तो ठीक है ?

दुर्योधन : देखिए, सीधे अपनी बात पर आइए। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है।

कृष्ण : दरबार बड़ा सूना लग रहा है।

दुर्योधन : भूमिका बांधने की कोई ज़रूरत नहीं।

कृष्ण : आपका चित्त बड़ा अशांत है।

दुर्योधन : देखिए, समय नष्ट मत कीजिए। मेरा चित्त शांत हो या अशांत, आपसे कोई मतलब नहीं।

कृष्ण : भाई, मैं आपका मित्र हूं।

दुर्योधन : राजा का कोई मित्र नहीं होता। अपनी बात कहिए।

कृष्ण : युधिष्ठिर को क्या कह दिया ?

दुर्योधन : ओह ! तो आप उस काम के लिए आए हैं ! देखिए, मेरी नीति स्पष्ट है, हर आदमी को अपना काम करना चाहिए। मैं राजा हूं, अपना काम कर रहा हूं। बाकी जो प्रजा हैं, उन्हें प्रजा की तरह रहना होगा।

कृष्ण : पांडव तुम्हारे भाई हैं।

दुर्योधन : राजा का कोई भाई-बहन नहीं होता।

कृष्ण : वे बनवास पूरा कर लौटे हैं। अब तुम्हें अपने वचन को पूरा करना चाहिए।

दुर्योधन : कल का दिया हुआ वचन मेरे लिए निरर्थक है।

कृष्ण : पांडव आधे राज्य के हकदार हैं।

दुर्योधन : यह किसने कहा ?

कृष्ण : तुमने कहा था।

दुर्योधन : तो आज कह रहा हूं, पांडवों को राज्य करने का कोई अधिकार नहीं, क्योंकि उन्हें कोई अनुभव नहीं।

कृष्ण : यह अधर्म है।

दुर्योधन : धर्म-अधर्म से मेरा कोई लेना-देना नहीं। मैं राजा था, राजा हूं, राजा रहूंगा। जो मैं चाहूंगा, वही होगा धर्म।

कृष्ण : अच्छा, आधा राज्य न सही, चौथाई ही दे दो।

दुर्योधन : बिलकुल नहीं।

कृष्ण : अच्छा चलो, पांच गांव ही दे दो।

दुर्योधन : कान खोलकर सुन लो कृष्ण ! मैं पांडवों को सुई की नोक बराबर भी ज़मीन नहीं दूंगा।

कृष्ण : इतना घमंड !

दुर्योधन : इससे ज़्यादा मेरे पास वक्त नहीं। आप जा सकते हैं।

कृष्ण : तुम चाहते हो कि युद्ध हो ?

दुर्योधन : तैयार हूं।

कृष्ण : सोच लो, युद्ध से सर्वनाश होगा।

दुर्योधन : युद्ध से मेरा लाभ होगा। चाहता हूं, युद्ध हो।

कृष्ण : तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया ?

दुर्योधन : मर्यादा में रहो कृष्ण ! जानते हो, किसके सामने खड़े हो ?

कृष्ण : ओह, इतना घमंड !

दुर्योधन : यह सचाई है।

कृष्ण : यह घमंड है।

दुर्योधन : तो यही सही।

कृष्ण : समझते नहीं, इसका फल क्या होगा ?

दुर्योधन : मा फलेषु कदाचन। हम बिना किसी फल की इच्छा के कर्म करते हैं। तुम अपनी ही बात भूल गए ? बोलो, क्या कहा था गीता में ?

कृष्ण : तुम्हें प्रसंग नहीं याद है।

दुर्योधन : समय नष्ट मत कीजिए।

कृष्ण : समय तुम नष्ट कर रहे हो।

दुर्योधन : मैं अपना काम कर रहा हूं।

कृष्ण : तो युद्ध के अलावा और कोई उपाय नहीं ?

दुर्योधन : बिल्कुल, कतई नहीं।

कृष्ण : तो मैं जा रहा हूं।

दुर्योधन : सुनो ! इस युद्ध में तुम्हारी सेना मेरी तरफ रहेगी।

कृष्ण : क्या ?

दुर्योधन : यह मेरी आज्ञा है। जाओ !

[युद्ध के बाजे बजने लगते हैं।]

पुरुष : इस तरह कौरव-पांडव युद्ध छिड़ गया। एक ओर दुर्योधन की सेना, दूसरी ओर पांडवों की। आप जानते ही हैं, महाभारत के युद्ध के शुरू में ही अर्जुन को मोह आ गया। कृष्ण भगवान ने अर्जुन को गीता सुनाकर उनका मोह भंग किया। इस पर महाभारत में जो गज़ब हुआ—

[भीम, नकुल, सहदेव उदास बैठे हैं।]

युधिष्ठिर : भीम, इस तरह खड़ा रहने का वक्त नहीं। चलो, युद्ध शुरू हो गया है। टूट पड़ो शत्रुओं पर। चलो ! बढ़ो !

भीम : आर्य ! मुझे उस स्थल पर ले चलो, जहां से मैं अपने शत्रुओं को देख सकूं।

युधिष्ठिर : देखो, चारों ओर शत्रु सेना खड़ी है।

भीम : नहीं, मुझे उस स्थल पर ले चलो, जहां से मेरे भाई अर्जुन को कृष्ण ने दिखाया था कौरवों को।

युधिष्ठर : समय नहीं है। युद्ध की घोषणा हो चुकी है।

भीम : हे आर्य, मैं अपने ही लोगों से युद्ध कैसे करूं ? मुझे भी अर्जुन की तरह मोह हो गया है। मैं पसीने से तरबतर हो रहा हूं। मेरा माथा घूम रहा है। मेरे हाथी कांप रहे हैं।

[हाथ से गदा गिर जाती है। भीम सिर पकड़कर बैठ जाते हैं और रोने लगते हैं।]

युधिष्ठिर : हे कृष्ण ! हमारी सहायता करो। जैसे अर्जुन का मोह भंग किया, वैसे अब भीम का भी मोह तोड़ो। दरअसल यह हमारा खानदानी रोग है महाराज !

कृष्ण : ओह ! अर्जुन ने यह बात नहीं बताई। क्यों भाई अर्जुन, यह तुम्हें बताना था।

अर्जुन : खानदान की बदनामी का डर था महाराज !

कृष्ण : क्यों आर्य भीम, क्या है तुम्हारा कष्ट ?

भीम : मुझसे यह युद्ध न होगा।

कृष्ण : आखिर क्यों ?

भीम : मैं यह युद्ध क्यों लड़ूं ? इस युद्ध का फल क्या होगा ?

कृष्ण : कर्मण्येव वा अधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

भीम : महाराज, मैं संस्कृत नहीं जानता।

कृष्ण : अर्जुन ! गीता की एक हिन्दी प्रति भीम को दो। यह लो। पढ़ो इसे। तुम्हारा मोह भंग हो जाएगा।

भीम : नहीं महाराज, यह गीता अर्जुन के लिए है। मेरा इससे काम नहीं चलेगा। मेरी समस्या दूसरी है। मुझे भीम-गीता चाहिए।

[नाड़ी देखते हैं।]

कृष्ण : अरे, तुम्हें तो बहुत तेज़ बुखार है !

भीम : पेट में दर्द, सिर में दर्द, चारों ओर मुझे दर्द ही दर्द दिखाई दे रहा है। मैं यह महाभारत युद्ध नहीं लड़ सकता महाराज ! **(भागता है। सब पकड़कर लाते है।)** मुझे तंग मत कीजिए। मैं यह युद्ध नहीं लड़ सकता। छोड़ दीजिए।

कृष्ण : क्यों ? बात क्या है ?

भीम : बस, लड़ नहीं सकता। एक बार कह दिया।

कृष्ण : पर क्यों ?

भीम : मेरा 'मूड ऑफ' हो गया।

कृष्ण : पर क्यों ? कोई कारण तो होगा ?

भीम : कारण क्यों नहीं है ? पांडवों में क्या सबसे श्रेष्ठ अर्जुन ही हैं ? मोह केवल उन्हें ही हो सकता है ? हम कोई ऐरे-गैरे नत्थूखैरे हैं क्या ? मुझे क्या समझते हैं ? आखिर हम भी यहां लड़ने आए हैं।

कृष्ण : बिल्कुल ठीक।

भीम : फिर केवल अर्जुन को ही इतना महत्त्व क्यों दिया गया ? जाएं अकेले लड़ें अर्जुन। मैं जा रहा हूं अपने घर। आखिर मेरा भी तो आत्मसम्मान है।

कृष्ण : क्यों नहीं, क्यों नहीं !

भीम : अर्जुन के तो कई मोह थे, चूंकि वक्त कम है, इसलिए मैं आपसे एक ही प्रश्न पूछता हूं—इस महाभारत से मेरा क्या फायदा होगा ?

कृष्ण : तुम विजयी होगे। अधर्मी शत्रुओं का नाश करोगे। अपने दुःख का बदला लोगे।

भीम : फर्ज़ कीजिए, मैं लड़ते-लड़ते मारा गया, तो मेरे बाल-बच्चों का क्या होगा।

कृष्ण : चलो, मैं वचन देता हूं—इस युद्ध में तुम नहीं मारे जाओगे।

भीम : देखिए तो अब बुखार कितना है ?

कृष्ण : अरे, अब तो बिल्कुल नॉर्मल है।

भीम : ठीक। अब आइए असली सवाल पर। फर्ज़ कीजिए, हम युद्ध में विजयी हो गए, तो इस विजय से मुझे क्या मिलेगा ?

कृष्ण : राज मिलेगा। तुम राज्य करोगे।

भीम : मुझे बहकाने की कोशिश मत कीजिए। मैं आपकी बातों में आने वाला नहीं। राज्य मिलेगा तो राजा होंगे मेरे बड़े भाई युधिष्ठिर। मुझे क्या मिलेगा ?

कृष्ण : क्या चाहिए तुम्हें ?

भीम : यही तो पता नहीं, मुझे क्या चाहिए; पर मुझे कुछ चाहिए—यही तो है भीममोह।

[कृष्ण, अर्जुन, युधिष्ठिर मंत्रणा करते हैं।]

भीम : **(स्वगत)** सुनो कृष्ण ! मैं तुम्हारी यह बात हरगिज़ नहीं मान सकता कि अपने सारे धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ। मैं क्यों छोड़ूं अपना धर्म ? यह सही है कि मैं सबसे ज़्यादा खाता हूं, सबसे ज़्यादा सोता

हूं; पर सबसे ज्यादा गुस्सा भी तो मुझी में है। जब कभी कहीं मुश्किल लड़ाई होती है तो मुझे ही सबसे आगे कर दिया जाता है—पर अब यह नहीं चलेगा। कर्म करो, फल की इच्छा न करो, मैं नहीं मानता यह बेसिर-पैर की बात। पहले बताओ, वचनबद्ध हो कि मुझे क्या मिलेगा, तभी मैं लड़ूंगा। 'आई वांट रिज़ल्ट हिअर एण्ड नाऊ।'

कृष्ण : (आते हैं) सुनो !

भीम : क्या है ?

कृष्ण : मगध का राज्यपाल बना दिए जाओगे।

भीम : नहीं, मुझे महाराज्यपाल बनने का वचन दो, तभी करूंगा मैं युद्ध, वरना जा रहा हूं।

[जाने लगता है।]

कृष्ण : अरे भाई, रुको। चारों ओर शत्रुओं से घिरे हो, बचकर जाओगे कहां ?

[फिर वही मंत्रणा]

भीम : जनाब, सीधी उंगली से घी नहीं निकलता। मोह होना बहुत जरूरी है। तभी मिलता है महत्त्व। और मोह भी बिलकुल ठीक वक्त पर होना चाहिए। हमारा यह जो खानदानी रोग है, इसके बहुत फायदे हैं। देखिए न इसका फल।

कृष्ण : (आकर) ठीक है, मगध के महाराज्यपाल बना दिए जाओगे।

[भीम प्रसन्न होकर अपनी गदा उठाकर घुमाता है।]

भीम : आ जा दुर्योधन मेरे सामने ! तेरी जांघ न तोड़ दूं तो मेरा नाम भीम नहीं। अब देख, मेरा मोहभंग हो गया। हा हा हा !

कृष्ण : **(नकुल और सहदेव के पास)** तुम्हें क्या हो गया ?

युधिष्ठिर : वही खानदानी रोग।

[दुर्योधन ताल ठोककर हंसता है।]

अर्जुन : ऐ ! तुम क्या हंसते हो ? यह हमारा पारिवारिक मामला है।

युधिष्ठिर : हमारी व्यक्तिगत बातों में टांग अड़ाते शर्म नहीं आती !

भीम : तभी तो मैं तोड़ूंगा इसकी टांग।

नकुल : इस युद्ध से मुझे क्या फायदा होगा ? हम क्यों लड़ें यह युद्ध ? हम जाकर दुर्योधन की सेना में क्यों न मिल जाएं ? आखिर हमारे भाई, काका, मामा, ताऊ दुर्योधन के ही साथ हैं।

कृष्ण : सुनो, यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत···ठीक है, आप लोग संस्कृत नहीं समझते, मैं हिन्दी अनुवाद में कहता हूं—अब यहां युद्ध नहीं हो सकता। आपस में लेन-देन अर्थात् उखाड़-पछाड़ ही हो सकता है। इसके अलावा अब यहां कुछ नहीं हो सकता।

पुरुष : अरे-रे-रे, कृष्ण को भी अब मोह हो गया ! सुनिए महाराज, इतना उदास मत होइए।

[सब आपस में लेन-देन, उखाड़-पछाड़ का दृश्य प्रस्तुत करते हैं। अर्जुन, युधिष्ठिर और कृष्ण चिन्तित खड़े हैं।]

पुरुष : मेरा खयाल है, अब आप लोग थक गए होंगे। थोड़ी देर विश्राम कर लीजिए, और हमें भी थोड़ा आराम लेने दीजिए। मतलब, अब मध्यान्तर···'इंटरवल'।

पहला : जी नहीं, हमें और देखना है।

दूसरा : हम टिकट खरीदकर आए हैं।

पुरुष : अच्छा, थोड़ा चाय-शाय पी आइए। थोड़ा गप्पशप्प।

तीसरा : भाई, इससे अच्छा गपशप क्या होगा ?

चौथा : समय मत बर्बाद कीजिए।

पुरुष : तो आपको समय की चिन्ता है! फिर तो बाहर निकलकर देख लीजिए, समय कैसा है। मतलब, अब दस मिनट का मध्यान्तर—'इण्टरवल'।

[संगीत]

—पर्दा—

माता

पात्र

बाबा
दीदी
बहू—(जया)
ननद
रामहित
जोगीवीर

[मंच पर प्रकाश आने के साथ ही कुछ स्त्रियां गाती हुई मंच के एक किनारे बैठी दिखती हैं।]

संगीत

हथवा में लिए तिल चाउर डलैय्या बेला पतिया हो
मोरी ई बहुआ झपटि रे चली है फुलवरिया
तो देवता मनावै रे
रहिया में खड़ी ननदिया तो बोले इक बोली रे
सुनो मोरी भौजी
मोरी ए भौजी कितना देवता मनाओ
बचउवा न होइ हैं रे
होरिलवा न होइ हैं रे।

[मंच पर यह दृश्य प्रस्तुत होता रहता है। बहू को रुलाकर ननद (दीदी) चली जाती है। रोती हुई बहू

पूजा कर घर लौटती है। देहरी से बाबा आते दिखते हैं।]

[जोगीवीर बाजा बजाते हुए कुछ बड़बड़ाते हैं। जया हाथ जोड़े खड़ी है।]

जोगी : बाच्चा तू बहुत दुखी है।

जया : हां, महाराज।

जोगी : बेटा तू हरवक्त एक ही गम में डूबी रहती है।

जया : धन्य है। आप को सब पता है।

जोगी : चार साल हो गये। तेरा करम फूटा है गोद खाली है। यह कैसी कुदरत की गाली है।

जया : आप त्रिकालदर्सी हैं।

जोगी : बम-बम दकम-दकम
बचवा कित्ता लगा सकती है रकम
जित्त रकम उत्ता भोलेनाथ की रहम
बम बम दकम दकम
बाच्चा छोड़ दे आपना गम
बम बम दकम दकम।

[एक किनारे रामहित और बाबा दिखते हैं।]

जया : दोहाई जोगीवीर की। कोई जानै नहीं। कोई सुनै नहीं। मुझे संतान हो जाय। मैं भी मां कहलाऊं। मां हो जाऊं। जोभी पूजा-पाठ, दानपुन्य कहो जोगीवीर, करूंगी, जरूर करूंगी।

जोगी : बम बम दकम दकम।

जया : अपन गहना गुरिया बेंच कर दान पुन्य करूंगी।

बाबा : क्या बात है बेटी ? रो रही है।

[बहू बाबा के चरण भूमि-स्पर्श से करती है। और फफककर रो उठती है।]

बाबा : सौभाग्यवती रहो।'''अरे, क्या बात है। क्या हुआ ?

[बहू बिना कुछ बोले भीतर चली जाती है।]

बाबा : पता नहीं क्या बात है। **(कुर्त्ता उतारकर रखते हुए)** क्या बात हो सकती है। इतनी सीधी सादी है कि'''।

[भीतर से लोटे में जल और तौलिया लिए जया आती है। बाबा हाथ-पैर धुलते हैं।]

बाबा : **(हाथ पोंछते हुए)** रामहित कहां है ?

जया : अभी नहीं आये।

बाबा : अरे दो बजे उसकी डियूटी खत्म हो जाती है। अब तो चार बज रहे हैं।

जया : बाबा भोजन यहीं ले आऊं या चौके में'''।

बाबा : सिर्फ चाय पीऊंगा। जब तक मेरी जया बेटी बतावेगी नहीं कि उसे क्या तकलीफ है। वह क्यों रो रही थी— मैं तब तक भोजन नहीं करूंगा। लेकिन यह रामहित अब तक क्यों नहीं आया। देखता हूं'''।

[कुर्त्ता पहनने लगते हैं।]

जया : बाबा जी, चाय तो पी लीजिये।

बाबा : साथ ही चाय पीयेंगे।

[बाबा जाते हैं। जया बाबा के झोले में से उनकी धोती तौलिया आदि सामान निकालकर रखती है। तभी पृष्ठ भूमि से बाजा बजाता हुआ कोई आता दिखता है।]

जया : हाय। जोगीवीर।

[जोगीवीर आते हैं।]

जोगीवीर : बम्म भोलेनाथ की। जै हो जोगीवीर। बाच्चा खिला जोगीवीर को खीर। वही हरेंगे तेरी पीर। आजा आ आ, जरा देखूं तेरा हाथ। घबड़ा नहीं कोई देख नहीं रहा। कोई सुन नहीं रहा। कोई गुन नहीं रहा।

[बाबा के साथ सहसा रामहित तेजी से प्रकट होते हैं।]

बाबा : बस बस, बन्द कर बकवास।

जोगी : सावधान, कर दूंगा सत्यानास।

बाबा : दफा ओ जाओ। भोलीभाली औरतों को ठगने और लूटने वाले।

रामहित : जाओ भाई जाओ।

जोगी : किसी से नहीं डरता। ऐसा मंत्र मारूं कि अन्दर से बंदर हो जाय। ऐसा जंत्र मारूं कि कलंदर भी छछुंदर हो जाय।

बाबा : अच्छा, तो हो जाय। चलाओ अपना जंत्र मंत्र। देखें तू कहां का है जोगीवीर।

जोगी : पछताओगे।

बाबा : घबड़ाओ नहीं।

[रामहित जोगी को समझाता है।]

रामहित : चला जा। किसके मुंह लग रहा है। बड़े तपस्वी सत्य-निष्ठ पुरुष हैं।

[जोगी नमस्कार करके भागता है। बाबा हंसते हैं।]

बाबा : जा बेटी, अब चाय ला।

[जया जाती है।]

बाबा : तो यह मामला है। क्यों रामहित इस मामले में बहू से कभी तुम्हारी कोई बात हुई।

रामहित : नहीं, कभी नहीं।

बाबा : बहू तुमसे अपना दुःख-सुख नहीं कहती।

रामहित : बड़ी लजाधुर है।

बाबा : तुम भी तो कुछ कम नहीं हो। देखो, बहू किस कदर संतान के लिए दुखी और चिन्तित है। ऐसी हालत में उसे कोई ठग सकता है। विश्वासघात कर सकता है। अरे तू कैसा मरद है कि अपनी पत्नी का दुःख-सुख न जाने। कैसा पति है कि तू पत्नी का विश्वासपात्र नहीं है।

रामहित : बात यह है कि मुझसे बहुत लजाती है।

बाबा : और तुम उससे भी ज्यादा लजाते हो।

रामहित : नहीं बाबा, बहू इतनी सीधी है कि कुछ कहती ही नहीं। बस, हर बात में यही कहती है—जैसी तुम्हारी खुशी ···जैसा तुम चाहो।

बाबा : इसका मतलब यह हुआ कि पत्नी निश्चेष्ट हो गयी। स्त्री निष्क्रिय पात्र रह गयी। वह अपने भीतर की बात अपने पति से भी नहीं कह पाती। **(स्वगत)** शरीर से निश्चेष्ट होने पर धीरे-धीरे पुरुष की स्वार्थपरता और बर्बरता को देख स्त्री अब अपनी आत्मा को भी धीरे-धीरे निश्चेष्ट और विलग करती जा रही है।

रामहित : नहीं बाबा ऐसा नहीं है। **(जया चाय लेकर आती है।)** फिर बताऊंगा।

बाबा : नहीं, तुम्हें अभी बताना पड़ेगा। बहू, तू भी बैठ। बैठ ना।

जया : मैं आपके सामने भला कैसे बैठ सकती हूं।

बाबा : अच्छा खड़ी रह।

जया : चूल्हे पर चावल चढ़ा आयी हूं जल जायेगा।

[भीतर भागती है।]

रामहित : देखा न, लाज के मारे कैसे भागी है।

[चाय पीते हैं।]

बाबा : हां कहो, क्या बता रहे थे।

रामहित : बात यह है कि···ऐसा है कि···बाबा आपसे कैसे बताऊं।

बाबा : अगर मुझसे तुम लोगों का इतना ही संकोच है तो अब मैं यहां नहीं टिकूंगा। महीने दो महीने, कभी-कभी आठ दस महीनों बाद यहां आता हूं। दो एक दिन यहां रहता हूं। तुम दोनों को अपना बेटा-बेटी मानता हूं। पर अगर तुम दोनों के सुख-दुःख का भागीदार नहीं हो सकता, किसी काम नहीं आ सकता तो व्यर्थ है मेरा

यहां आना और रहना।

रामहित : नहीं-नहीं बाबा जी ऐसा न कहिए। कभी स्वप्न में भी ऐसा न सोचिये। यह हमारा कितना सौभाग्य है कि आप जैसे महात्मा हमारे घर पधारते हैं। बाबा जी, मैं आपको सब सही-सही बताता हूं। बात यह है कि···।

बाबा : फिर वही बात 'ई है की'। कोई गड़बड़ी तो नहीं है? कोई कमजोरी वमजोरी।

रामहित : नहीं-नहीं बिल्कुल नहीं। आप ही ने तो हमारी शादी करायी।

बाबा : हां-हां, वह तो कराता ही रहता हूं।

रामहित : आप ही ने तब मुझसे कहा था बाबा, हां आप ने कहा था कि···कहा था।

बाबा : अरे कुछ कहेगा भी।

रामहित : बता दूं? बता दूं।···मुझे लाज लगता है।

बाबा : अच्छा, तो मैं चला।

[रामहित बाबा को रोक लेता है।]

रामहित : तो बता दूं। आप बुरा तो नहीं मानेंगे।

बाबा : इसमें ऐसी क्या बात है।

रामहित : बाबा बात ई है कि···आपने एक बार कहा था। कहा था कि शादी के बाद कम-से-कम तीन बरस तक बच्चा नहीं होना चाहिए।

[बाबा मुस्करा पड़ते हैं। रामहित लजाकर एक किनारे जाता है।]

बाबा : अरे रामहित, तू किधर गया? (**रामहित से**) रामहित, अब तो वह तीन साल बीत गया न।

रामहित : जी अब कोई चिन्ता की बात नहीं।

बाबा : अच्छा सुनो, मुझे आज ही रात की गाड़ी से कोटा जाना है।

रामहित : क्यों? मैंने तो आपको सबकुछ सच-सच बता दिया। अब भी नाराज हैं क्या बाबा।

बाबा : कोटा के पास एक गांव में बच्चों की एक पाठशाला बनायी है। उसमें पढ़ाई का काम शुरू कराना है।

रामहित : (**पुकारता है।**) अरे सुनती हो। सुनो तो।

[जया आती है।]

बाबा : बेटी, मुझे अभी आठ चालीस की गाड़ी पकड़नी है। चार रोटी जरा-सी सब्जी, और हां देखना हरी चटनी न भूलना—डिब्बे में रख कर दे दो।···अरे, फिर रोने लगी। इधर आ। आ इधर। तू सौभाग्यवती है। पुत्रवती होगी।

[जया बाबा के चरणों में। बाबा उसे आशीष देते उठाते हैं। प्रकाश बुझकर फिर उन्हीं स्त्रियों पर—संगीत उठता है।]

अरे फुलवरिया के देवता
अपन मुह बोलैइ रे
मोरी ऐ बहुआ
सुनो मोरी बिटिया
अब मति अइयो फुलवरिया
तू गरुए गरभवती रे।
होत बिहान सुरुज सुर उपजा
अरे अरी मोरी सखिया
गर्भ में आये नन्दलाल
बहू मैं निहाल मोरी सखिया
तिरिया के जन में कवन फल ओ-ओ मोरे साहेब
जब पुतवा जनम लेई रे।
पुतवा के जनमैं कवन फल ओ मोरी साहेब
पुतवा सपूत जब होई रे।

संगीत

वाजन लागी आनंद बधइया
गावहिं सखी सोहर रे।
[बहू और ननद का नृत्य]
[संगीत फिर बदलता है। उधर मंच पर अभिनय होता है।]
आंगन में ठाढ़ी ननदिया पो अड़यि लड़यि बोलै ना।
कोखिया में आइल होरिलवा
तो कंगना बधैइया हम लेवै ना।
कितना लड़ तू ननदिया कंगन ताही देवै रे।
समझो देहुलिया पर की बात
करजेवा मोर सालै रे।
[संगीत समापन के साथ मंच पर अकेली जया चौक पूर रही है। सुबह का समय है। बाहर से रामहित साग-सब्जी लेकर आता है।]

रामहित : अरे। क्या है। क्या बात है—मुझे भी बताओ।
[जया हंसती हुई भीतर भागती है। रामहित आश्चर्य-चकित खड़ा है। जया तिल अक्षत लाकर चारों दिशाओं में फेंकती है। जितना ही रामहित पूछता है, उतना ही वह लजाती है।]

रामहित : अरे बात क्या है। अरे हंसती रहेगी या···। ओ हो मुझसे छिपायेगी। क्या है ?
[जया मुस्कराती हुई देखती है।]

रामहित : अच्छा-अच्छा, समझ गया। समझ गया।
जया : क्या ?
रामहित : वही न।
जया : भक।···(रुककर) बाबा ने आशीर्वाद दिया···।
[भागती है। बाहर से बाबा आते हैं।]

बाबा : कहां हो भाई।
रामहित : अरे बाबा।
[पैर छूता है। भीतर से दौड़ी हुई जया आती है। पैर छूने आ रही थी। पर लाज के मारे शरमाकर एक किनारे खड़ी है।]

बाबा : अरे, क्या बात है।
जया : बाबा का आशीर्वाद।
[बाबा बढ़कर उसका माथा-सिर छूकर आशीर्वाद देते हैं।]

जया : बाबा, आप···भगवान हैं। जो कहते हैं सच हो जाता है।
बाबा : जा, बेटी चाय ला।
[जया जाती है।]
बाबा : अब बड़े ध्यान से सुनो रामहित।
रामहित : हां, बाबा।
बाबा : पूजा-मात्र धर्म नहीं है। न पुजारी, पुरोहित मात्र धर्म का व्यवस्थापक है, बल्कि पूरा जीवन धर्म है। और हर मनुष्य इसका इंतजामकार है। हर मनुष्य के लिए धर्म जीवन है।
रामहित : बिल्कुल ठीक बाबा।
बाबा : इसलिए जीवन जीने के लिए जीवन संस्कार निहायत जरूरी चीज है।
[जया चाय लाती है।]
बाबा : बैठ बेटी। तुझे यह पता ही है कि अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को मां के गर्भ में ही चक्रव्यूह भेदने का ज्ञान मिल गया था।
जया : हां, अर्जुन ने अपनी पत्नी को उस समय चक्रव्यूह भेदने की कथा कही थी।
रामहित : आगे मां सो गयी तो चक्रव्यूह से बाहर आने की कथा

रह गयी।

बाबा : हां जो सोया है, उसे संस्कार और ज्ञान कहां से मिलेगा ?—सुन बेटी, तुम्हें अपने पुत्र जन्म पूर्ण किये जाने वाले संस्कार करने हैं।

जया : जरूर करूंगी।

[बाबा के संवाद के बीच में ननद आ खड़ी होगी।]

बाबा : जीवन में कुल सोलह संस्कार हैं। उनमें चार संस्कार जन्म से पहले किये जाने वाले हैं। उनमें पहला संस्कार है गर्भाधान संस्कार।

ननद : गर्भाधान संस्कार। मेरी भाभी को उलटा-सीधा समझाने आ गये। आ भाभी अंदर।

बाबा : अरे तू भी बैठ। बैठेगी नहीं।···हां तो गर्भाधान संस्कार, मतलब जन्म देने का कार्य तीनों लोकों में आत्मविस्तार का कार्य है। इस भाव से जन्म देने का कार्य सबसे पवित्र काम है।

ननद : सुनो इनकी। इस भाव से जनम देना पवित्र काम हैं। बड़ा पवित्र है वाह !

रामहित : तू चुप रह।

बाबा : गर्भाधान के बाद पुंसवन संस्कार—यह गर्भ के तीसरे माह में। यह संस्कार हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा, पुष्य—इनमें से किसी एक नक्षत्र में, पति या उसके वंश का कोई पुरुष संपन्न करता है।

जया : कैसे ?

ननद : अब लो। चली है यह भी बजार।

बाबा : दूध वाले वृक्ष की टहनी स्त्री की दाहिनी नाक में डालकर जीवपुत्र मंत्र का उच्चारण करता है और प्रजापति को एक ग्रास समर्पित कर प्रार्थना करता है कि पुत्रों से उत्पन्न दुखों से मेरी रक्षा करो।

ननद : अब संभालो—टहनी नाक में घुसेड़ो।

रामहित : चुप रह। जा अंदर।

बाबा : फिर आता है सीमंतोन्नयन संस्कार। इसमें पुरुष स्त्री की मांग दूब के तीन तिनकों से या फलसहित गूलर की टहनी से बीच में से विभाजित करता है—मंत्र के साथ। संगीत वादन होता है। और पुरुष अपने इलाके में बहने वाली नदी का नाम लेता है। फिर स्त्री के सिर में जौ के नये अंकुर बांध दिये जाते हैं। और स्त्री आकाश में तारे दिखायी देने तक मौन रहती है। फिर पुरुष स्त्री के साथ पूर्व दिशा में जाकर एक बछड़े का स्पर्श करता है, तब स्त्री मौन तोड़ती हैं।

[ननद हंस पड़ती है। दोनों मना करते हैं।]

बाबा : छोड़ो छोड़ो। जिसका जैसा संस्कार होगा, वैसा ही उसका व्यवहार होगा।

ननद : चलो चलो हम बहुत देखें हैं।

बाबा : फिर है विष्णुबलि संस्कार—गर्भ के आठवें महीने में किया जाता है। इसमें पदम या स्वस्तिक की बेदी बनाकर चौंसठ आहुतियां भात की, विष्णु को दी जाती है।

ननद : इसका मतलब क्या है ? इनसे फायदा।

बाबा : हां फायदा। फायदा नहीं तो कायदा किस काम का ? इसका फायदा यह है कि जन्म देना माने विश्व चेतना का अंग बनाना।

[ठठाकर हंसती है।]

ननद : अरे कोई काम की बात बताओ तो जानू।

[बाबा आगे बताने का अभिनय-दृश्यवत-करने रहते हैं। मंच के किनारे बैठी हुई स्त्रियों का संगीत उठता है।]

आनंद भये मोरी नगरी

आज अरे मन रंजना
नंदलाल भये आज मोरे अंगना।
कितना सुन्दर श्याम
अरे मन रंजना।...
[जोगीवीर दिखता है। ननद झाड़ू उठाकर उसे मारने दौड़ती है।]

□ □